VASVASE AUR UNKA ILAJ (HINDI)

तख़्रीज शुदा

वस्वसे और उन का इलाज



शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी रज़वी

مکتبۃ المدینہ
(دعوتِ اسلامی)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ़

अज़ : शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा।

दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले।

(المُستطرَف ج١ ص٤٠ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत



13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

वस्वसे और उन का इ़लाज

येह रिसाला **(वस्वसे और उन का इलाज)**

शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَکَاتُھُمُ الْعَالِیَہ ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है ।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक-त-बतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है । इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब या ई-मेइल) मुत्तलअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये ।

राबित़ा : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

मक-त-बतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस,

अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा,

अह़मद आबाद-1, गुजरात,

MO. 98987 32611 • E-mail : hindibook@dawateislamihind.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

वस्वसे और उन का इ़लाज

शैत़ान लाख सुस्ती दिलाए येह रिसाला (60 सफ़ह़ात) आख़िर तक पढ़ लीजिये। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ वस्वसों की हलाकत ख़ैज़ियों से अमान मिलेगी।

दुआ़ए कुनूत के बा'द दुरूद शरीफ़ पढ़ना बेहतर

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ह़लीमा मुआ़ज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ (दुआ़ए) ''**कुनूत**'' में सरकारे आ़ली वक़ार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक पढ़ते थे। (فَضْلُ الصَّلاۃِ عَلَی النَّبِیّ لِلقاضی الْجَھْضَمِی ص۸۷ رقم ۸۹)

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 1250 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, ''**बहारे शरीअ़त**'' जिल्द अव्वल सफ़ह़ा 655 पर **सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्तरीक़ह** ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : (नमाज़े वित्र की तीसरी रक्अ़त में) **दुआ़ए कुनूत** के बा'द दुरूद शरीफ़ पढ़ना बेहतर है।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

वस्वसे के लफ़्ज़ी मा'ना

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ''वस्वसा'' के लु-ग़वी मा'ना हैं : ''धीमी आवाज़'' शरीअ़त में बुरे ख़यालात और फ़ासिद फ़िक्र (या'नी

बुरी सोच) को **वस्वसा** कहते हैं। (اشعہ ج ا ص۳۰۰) तफ़्सीरे **ब-ग़वी** में है : **वस्वसा** उस बात को कहते हैं जो शैत़ान इन्सान के दिल में डालता है। (تفسیر بغوی ج۴ ص۱۸، ۱۲۷۰۵) आ़म तौ़र पर "वस्वसे" हर एक को आते हैं, किसी को कम किसी को ज़ियादा। बा'ज़ लोग बहुत ज़ियादा ह़स्सास होने के सबब "**वस्वसों**" के **मु-तअ़ल्लिक़** सोच सोच कर उन्हें अपने ऊपर मुसल्लत़ कर लेते और फिर ख़ुद ही तक्लीफ़ में आ जाते हैं ! अगर "वस्वसों" पर ग़ौर न किया जाए तो उ़मूमन येह ख़ुद ही **ख़त्म** हो जाते हैं। जूं ही **वस्वसे** आने शुरूअ़ हों "**ज़िक्रुल्लाह**" म-सलन "**अल्लाह अल्लाह**" करना शुरूअ़ कर दीजिये اِنۡ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ शैत़ान फ़िरार हो जाएगा। मुसल्मान जिस क़दर **रब्बुल आ़-लमीन** عَزَّوَجَلَّ की इता़अ़त में आगे बढ़ता है, उसी क़दर शैत़ान की मुख़ा-लफ़त व अ़दावत भी बढ़ जाती है और वोह हमा अक़्साम (या'नी त़रह़ त़रह़) के मक्रो फ़रेब (और धोके) के जाल बिछाता चला जाता है और उस को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की **इ़बादत** और उस के प्यारे **रसूल** صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की **सुन्नत** से रोकने की भी भरपूर कोशिश करता है और त़रह़ त़रह़ के **वस्वसे** दिला कर, गन्दे ख़यालात ज़ेह्न में ला कर परेशान करता रहता है, यहां तक कि बसा अवक़ात जहालत की बिना पर आदमी इस के इन **वस्वसों** का शिकार हो कर नेकी और भलाई के काम से रुक जाता है और यूं शैत़ान अपने मक़्सद में काम्याब हो जाता है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने कु़रआने मजीद पारह 18 **सू-रतुल मुअमिनून** आयत नम्बर 97 और 98 में अपने प्यारे

मह़बूब صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से इर्शाद फ़रमाया :

وَقُلْ رَّبِّ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ هَمَزٰتِ الشَّیٰطِیْنِ ﴿۹۷﴾ وَ اَعُوْذُ بِكَ رَبِّ اَنْ یَّحْضُرُوْنِ ﴿۹۸﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और तुम अ़र्ज़ करो कि ऐ मेरे रब ! तेरी पनाह शयातीन के **वस्वसों** से और ऐ मेरे रब ! तेरी पनाह कि वोह मेरे पास आएं।

न वस्वसे आएं न कभी गन्दे ख़यालात
हो ज़ेहन का और दिल का अ़ता कुफ़्ले मदीना

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

हर एक के साथ एक फ़िरिश्ता और एक शैत़ान होता है

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 344 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, **"मिन्हाजुल आ़बिदीन"** सफ़ह़ा 79 ता 80 पर तह़रीर कर्दा **हुज्जतुल इस्लाम** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِی के फ़रमान का ख़ुलासा है : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने हर इन्सान के दिल पर एक **फ़िरिश्ता** मुक़र्रर फ़रमाया है जो इसे नेकी की दा'वत देता है, उस फ़िरिश्ते को **मुल्हिम** और उस की दा'वत को **इल्हाम** कहते हैं। इस के मुक़ाबले में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से एक **शैत़ान** मुसल्लत़ कर दिया गया है, जो बुराई की दा'वत देता है, इस शैत़ान को **वस्वास** और इस की दा'वत को **वस्वसा** कहते हैं। सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِی मज़ीद फ़रमाते हैं : "अगर्चे अक्सर उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام की येह राय है कि **फ़िरिश्ता** इन्सान को नेकियों की

त़रफ़ बुलाता है और **शैत़ान** सिर्फ़ बुराइयों की त़रफ़ ।'' लेकिन मेरे शैख़ رَحْمَۃُاللہِ تعالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया है कि शैत़ान बसा अवक़ात ब ज़ाहिर नेकी की दा'वत दे कर भी बुराई की त़रफ़ लगा देता है और वोह इस त़रह़ कि **बड़ी नेकी** के बजाए **छोटी नेकी** की त़रफ़ बुलाता है, जिस से एक बड़े गुनाह करने का नुक़्सान नेकी के सवाब से ज़ियादा हो । जैसे **उ़ज्ब** (या'नी ख़ुद पसन्दी) वग़ैरा ।

सरवरे दीं लीजे अपने ना तुवानों की ख़बर
नफ़्सो शैत़ां सय्यिदा कब तक दबाते जाएंगे (ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللہُ تعالٰی عَلٰی مُحَمَّد

हमज़ाद किसे कहते हैं

मिरक़ात और **अशि'अ़तुल्लम्आ़त** में है कि जूं ही किसी इन्सान का बच्चा पैदा होता है, उसी वक़्त इब्लीस के यहां भी बच्चा पैदा होता है जिसे फ़ारसी में **हमज़ाद** और अ़-रबी में **वस्वास** कहते हैं ।

(اشعة اللمعات ج ۱ ص ۸۷، مرقاة ج ۱ ص ۲۴۴، مراٰة ج ۱ ص ۸۳)

आक़ा का हमज़ाद मुसल्मान हो गया

ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन मसऊ़द رَضِیَ اللہُ تعالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि म-दनी ताजदार صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया कि तुम में ऐसा कोई नहीं जिस पर एक साथी **जिन्न** (शैत़ान) और एक साथी **फ़िरिश्ता** मुक़र्रर न हो । लोगों ने दरयाफ़्त किया : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! क्या आप पर भी ? इर्शाद फ़रमाया : मुझ पर भी, लेकिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मुझे उस पर मदद दी जिस से वोह शैत़ान **मुसल्मान**

हो गया, अब वोह मुझे भलाई का ही मश्वरा देता है।

(صَحیح مُسلِم ص١٥١٢ حدیث٢٨١٤)

सब के साथ एक शैत़ान होता है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! येह ज़ेह्न में रहे कि सिर्फ़ **सरकारे मदीना** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का **हमज़ाद** ही मुसल्मान हुवा, बाक़ी सभी के ''हमज़ाद'' पक्के काफ़िर हैं। बहर ह़ाल हम पर एक ऐसा शैत़ान मुसल्लत़ है जो कि **कट्टर** काफ़िर है और हमें **वस्वसे** दिलाता और हर वक़्त हमारी मुख़ा-लफ़त व अ़दावत में लगा रहता है।

मुझे नफ़्से ज़ालिम पे कर दीजे ग़ालिब

हो नाकाम हमज़ाद या ग़ौसे आ'ज़म

(वसाइले बख़्शिश, स. 297)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

शैत़ान फ़ारिग़ है तू मश्ग़ूल

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 344 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब मुतर्जम ''**मिन्हाजुल आ़बिदीन**'' सफ़ह़ा 77 पर **हुज्जतुल इस्लाम** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِى ह़ज़रते सय्यिदुना यह़्या बिन मुआ़ज़ राज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِى का येह क़ौल नक़्ल करते हुए फ़रमाते हैं : ''शैत़ान फ़ारिग़ है और तू मश्ग़ूल, वोह तुझे देखता है मगर तू उसे नहीं देखता, तूने उसे भुलाया हुवा है मगर इस ने तुझे नहीं भुलाया और तेरे अन्दर भी शैत़ान के कई यार व मददगार (म-सलन नफ़्स और

ख़्वाहिशात वग़ैरा मौजूद) हैं, इस लिये उस से मुह़ा-रबा (या'नी लड़ाई) कर के उस को मग़्लूब करना ज़रूरी है, वरना तू इस की शरारतों और हलाकतों से मह़फ़ूज़ नहीं रह सकता ।" (مِنْهاجُ الْعابِدِین (عربی)ص٤٦)

कलेजा शयात़ीं का थर्रा उठेगा

पुकारो सभी मिल के या ग़ौसे आ'ज़म

(वसाइले बख़्शिश, स. 296)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

शैत़ान बदन में ख़ून की त़रह़ गर्दिश करता है

शैत़ान हम से इस क़दर क़रीब है कि **ग़ैबदान** आक़ा صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "बेशक शैत़ान इन्सान (के बदन) में ख़ून की त़रह़ गर्दिश करता है ।" (بُخاری ج ١ ص٦٦٩ حدیث٢٠٣٨) सूफ़ियाए किराम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ السّلام फ़रमाते हैं : पस इस के रास्तों को भूक के ज़रीए़ तंग करो । (کشفُ الْخِفاء ج ١ ص١٩٨)

ज़ियादा खाने के 6 तशवीश नाक नुक़्सानात

जो डट कर खाते हैं वोह ग़ौर फ़रमा लें कि शैत़ान से किस त़रह़ पीछा छूटेगा ! **हुज्जतुल इस्लाम** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی फ़रमाते हैं : मन्क़ूल है, ज़ियादा खाने में **छ**[6] **बुराइयां** हैं : 《1》 दिल से ख़ौफ़े ख़ुदा चला जाता है 《2》 मख़्लूक़े ख़ुदा पर रह़मत का जज़्बा या'नी हमदर्दी दिल से निकल जाती है क्यूं कि ऐसा शख़्स येह समझता है कि मेरी त़रह़ सभी पेट भरे

हुए हैं ﴾3﴿ इ़बादत भारी पड़ जाती है ﴾4﴿ वा'ज़ व नसीह़त (सुन्नतों भरा बयान) सुन कर दिल में नरमी पैदा नहीं होती ﴾5﴿ अगर ख़ुद मुबल्लिग़ है और बयान और ह़िक्मत की बात करता है तो लोगों के दिलों पर इस का असर नहीं पड़ता ﴾6﴿ त़रह़ त़रह़ की बीमारियां **जनम** लेती हैं।

(مُلَخَّص از اِحیاءُ الْعُلوم ج ۳ص ۴۰)

या इलाही भूक की दौलत से मालामाल कर

दो जहां में अपनी रह़मत से मुझे ख़ुशह़ाल कर (ज़ौक़े ना'त, स. 67)

(भूक के फ़वाइद और ज़ियादा खाने के नुक़्सानात की तफ़्सीली मा'लूमात के लिये **फ़ैज़ाने सुन्नत** जिल्द अव्वल के बाब ''पेट का क़ुफ़्ले मदीना'' का मुत़ा-लआ़ फ़रमाइये)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने जब शैत़ान को मरदूद क़रार दिया तो उस ने इन्सान से दुश्मनी का ए'लान कर दिया ! उस का क़ौल क़ुरआने मजीद पारह 8 **सू-रतुल आ'राफ़** आयत नम्बर 16 और 17 में इस त़रह़ नक़्ल किया गया है :

قَالَ فَبِمَاۤ اَغْوَیْتَنِیْ لَاَقْعُدَنَّ لَهُمْ صِرَاطَكَ الْمُسْتَقِیْمَ ﴿۱۶﴾ ثُمَّ لَاٰتِیَنَّهُمْ مِّنْۢ بَیْنِ اَیْدِیْهِمْ وَ مِنْ خَلْفِهِمْ وَ عَنْ اَیْمَانِهِمْ وَ عَنْ شَمَآىٕلِهِمْؕ وَ لَا تَجِدُ اَكْثَرَهُمْ شٰكِرِیْنَ ﴿۱۷﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : (शैत़ान) बोला : तो क़सम इस की, कि तूने मुझे गुमराह किया मैं ज़रूर तेरे सीधे रास्ते पर इन की ताक में बैठूंगा, फिर ज़रूर मैं इन के पास आऊंगा इन के आगे और पीछे और दाहने और बाएं से। और तू इन में अक्सर को शुक्र गुज़ार न पाएगा।

मह़बूबे ख़ुदा सर पे अजल आ के खड़ी है

शैत़ान से अ़त्त़ार का ईमान बचा लो

(वसाइले बख़्शिश, स. 86)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

वस्वसों के जुदा जुदा अन्दाज़

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! शैत़ान तो उन की दुश्मनी से भी बाज़ नहीं आता जो कि इस के साथ अ़दावत नहीं रखते और इस की मुख़ा-लफ़त भी नहीं करते बल्कि इस के पक्के दोस्त हैं और इस मरदूद की इत़ाअ़त करते हैं, जैसा कि कुफ़्फ़ार, गुमराह और फ़ासिक़ो फ़ाजिर लोग, तो जब येह अपने ''दोस्तों'' को भी नहीं छोड़ता और उन्हें भी बराबर **वस्वसे** डाले जाता और तबाही व हलाकत में ढीट से ढीट तर बनाए चला जाता है, तो फिर उन उ़-लमाए दीन और सुन्नतों के **मुबल्लिग़ीन** کَثَّرَھُمُ اللّٰہُ الْمُبِین (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ऐसों की कसरत करे) के साथ उस की अ़दावत का क्या ह़ाल होगा जो कि हर वक़्त उस की मुख़ा-लफ़त करते, मुसल्मानों को इस के दाव **पेच** से बा ख़बर रखते और यूं इस को ग़ज़ब नाक करने (या'नी ग़ुस्सा दिलाने) और इस के गुमराह कुन मन्सूबों को ख़ाक में मिलाने में मसरूफ़ रहते हैं। बस इस के **वस्वसों** से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की पनाह मांगते रहना चाहिये क्यूं कि येह मरदूद शैत़ान बहुत ज़ियादा मक्कार व चालाक है हर एक को उस की नफ़्सिय्यात के मुत़ाबिक़ **वस्वसों** का शिकार बनाता है जैसा कि **मुफ़स्सिरे** शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان

फ़रमाते हैं : ख़याल रहे कि शैत़ान आ़लिमों के दिल में **आ़लिमाना वस्वसे** और सूफ़ियों के दिल में **आ़शिक़ाना वस्वसे**, अ़वाम के दिल में **आ़मियाना वस्वसे** डालता है । (या'नी) **''जैसा शिकार वैसा जाल !''** बहुत दफ़्आ़ (गुनाहों को ऐसा सजा कर पेश करता है कि) इन्सान गुनाह को इ़बादत समझ लेता है ! (मिरआत, जि. 1, स. 87) बा'ज़ अवक़ात **शैत़ान** अपने आप को **''ख़ुदा''** कह कर भी सामने आ जाता है और गुमराह करने की कोशिश करता है, जैसा कि हमारे पीरो मुर्शिद शहन्शाहे बग़दाद **हुज़ूरे ग़ौसे आ'ज़म** सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी قُدِّسَ سِرُّهُ الرَّبَّانِی के पास आया था ।

सुन लो शैत़ां ने हर त़रफ़ हर सू
ख़ूब फैला के जाल रखखा है

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के बारे में वस्वसे

हमारे प्यारे आक़ा, मदीने वाले **मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने हि़फ़ाज़त निशान है : तुम में से किसी के पास शैत़ान आता है तो उस से कहता है कि फ़ुलां चीज़ किस ने पैदा की ? फ़ुलां किस ने ? यहां तक कि कहता है कि तुम्हारे रब عَزَّوَجَلَّ को किस ने पैदा किया ? जब इस ह़द तक पहुंचे तो ''اَعُوْذُ بِالله'' पढ़ लो और इस से बाज़ रहो ।

(بُخاری ج ۲ ص۳۹۹ حدیث۳۲۷۶)

हर सुवाल का जवाब नहीं दिया जाता

मुफ़स्सिरे शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर दस मरतबा दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर सो रह़मतें नाज़िल फ़रमाता है। (طبرانی)

ख़ान عَلَیْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : या'नी इस का जवाब सोचने की कोशिश भी मत करो, वरना शैत़ान सुवाल दर सुवाल करेगा। "اَعُوْذُ بِاللّٰه" पढ़ कर उसे भगा दो, हर सुवाल का जवाब नहीं दिया जाता। रब (عَزَّوَجَلَّ) ने शैत़ान के सज्दा न करने पर उस के दलाइल का जवाब न दिया। बल्कि फ़रमाया : فَاخْرُجْ مِنْهَا (या'नी तू **जन्नत** से निकल जा। (پ ١٤، الحجر ٣٤)) ख़याल रहे कि اَعُوْذُ بِاللّٰهِ (مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْم पढ़ना) दफ़्ए शैत़ान के लिये इक्सीर है।

(मिरआत, जि. अव्वल, स. 82)

नफ़्सो शैत़ां की शरारत दूर हो

येह करम या मुस्त़फ़ा फ़रमाइये

(वसाइले बख़्शिश, स. 87)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

वस्वसे का क़ुरआनी इ़लाज

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुवा जब भी **वस्वसा** आए "اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْم" पढ़ कर उस को दफ़्अ़ करना चाहिये। **वस्वसे** आने की सूरत में क़ुरआने पाक में भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की पनाह मांगने का हुक्म दिया गया है चुनान्चे पारह 9 **सू-रतुल आ'राफ़** आयत नम्बर 200 में इर्शाद होता है :

وَ اِمَّا یَنْزَغَنَّكَ مِنَ الشَّیْطٰنِ نَزْغٌ فَاسْتَعِذْ بِاللّٰهِ ؕ اِنَّهٗ سَمِیْعٌ عَلِیْمٌ ﴿۲۰۰﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और ऐ सुनने वाले ! अगर शैत़ान तुझे कोई कूंचा (वस्वसा) दे तो **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) की पनाह मांग, बेशक वोही सुनता जानता है।

मुझ को दे दे पनाह शैतां से

इस से ईमां मेरा बचा या रब

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

इमाम राज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى और शैत़ान

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 502 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, **"मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत (मुख़र्रजा)"** सफ़ह़ा 493 ता 494 पर है : (ह़ज़रते सय्यिदुना) **इमाम फ़ख़रुद्दीन राज़ी** رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के नज़्अ़ का वक़्त जब क़रीब आया, शैत़ान आया, उस वक़्त शैत़ान पूरी जान तोड़ कोशिश करता है कि किसी त़रह़ इस (बन्दे) का ईमान सल्ब हो जाए। (या'नी छीन लिया जाए कि) अगर इस वक़्त (वोह बन्दा ईमान से) फिर गया तो फिर कभी न लौटेगा। (चुनान्चे) उस (या'नी शैत़ान) ने उन से पूछा कि तुम ने तमाम उ़म्र मुना-ज़रों, मुबा-ह़सों में गुज़ारी, **ख़ुदा** (عَزَّوَجَلَّ) को भी पहचाना ? आप (رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه) ने फ़रमाया : "बेशक ख़ुदा (عَزَّوَجَلَّ) एक है।" उस (या'नी शैत़ान) ने कहा : इस पर क्या दलील ? आप (رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه) ने एक दलील क़ाइम फ़रमाई। वोह (या'नी शैत़ान) ख़बीस **मुअ़ल्लिमुल म-लकूत** (या'नी फ़िरिश्तों को ता'लीम देने वाला। उस्ताद) रह चुका है, उस ने वोह दलील तोड़ दी। उन्हों ने दूसरी दलील क़ाइम की, उस ने वोह भी तोड़ दी। यहां तक कि **तीन सो साठ 360 दलीलें** ह़ज़रते (सय्यिदुना इमाम फ़ख़रुद्दीन राज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى) ने क़ाइम कीं और उस ने सब तोड़ दीं। अब येह (या'नी इमाम साहि़ब رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه) सख़्त परेशानी में और निहायत मायूस।

आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के पीर ह़ज़रते (सय्यिदुना शैख़) नज्मुद्दीन कुब्रा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ कहीं दूर दराज़ मक़ाम पर वुज़ू फ़रमा रहे थे, वहां से आप (या'नी पीरो मुर्शिद) ने (इमाम राज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى को) आवाज़ दी : **''कह क्यूं नहीं देता कि मैं ने ख़ुदा (عَزَّ وَجَلَّ) को बे दलील एक माना ।''**

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने शैत़ान किस किस अन्दाज़ पर वार करता है ! अगर इस की बात पर ध्यान दे दिया जाए तो फिर येह पीछे ही पड़ जाता है। इस को NO LIFT करना, इस के ''वस्वसों'' की त़रफ़ तवज्जोह न करना भी **वस्वसों का इ़लाज** है नीज़ **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ से हर दम शैत़ान की शरारतों से पनाह मांगते रहना चाहिये और येह भी मा'लूम हुवा कि किसी कामिल पीर का मुरीद बन जाना चाहिये कि मुर्शिद की तवज्जोह भी **वस्वसए शैत़ानी** को दफ़्अ़ करती है ।

है अ़त्तार को सल्बे ईमां का धड़का
बचा इस का ईमां बचा ग़ौसे आ'ज़म

(वसाइले बख़्शिश, स. 296)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

तक़्दीर के बारे में वस्वसे

शैत़ान तक़्दीर के मुआ़-मलात में भी दिल में **वस्वसे** डालता रहता है, म-सलन जो कुछ तक़्दीर में लिखा है हम उस के पाबन्द हैं, तक़्दीर के आगे मजबूरे मह़ज़ हैं, हम तो वोही कर रहे हैं जो तक़्दीर में लिखा है, फिर क़ब्र व जहन्नम की सज़ाएं क्यूं ? वग़ैरा वग़ैरा । यक़ीनन

येह भी शैत़ान का धोका है, इस मुआ़-मले में सोचें भी नहीं, वरना शैत़ान गुमराह कर देगा, बस "اَعُوْذُ بِاللہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْم" पढ़ कर इस मरदूद को भगा दीजिये।

जो जैसा करने वाला था वैसा लिख दिया गया

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! याद रखिये ! जो जैसा करने वाला था, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उसे अपने इ़ल्म से जाना और उस के लिये वैसा लिखा, उस عَزَّوَجَلَّ के जानने और लिखने ने किसी को मजबूर नहीं किया। इस बात को इस आ़म फ़ह्म मिसाल से समझने की कोशिश फ़रमाइये जैसा कि आजकल क़ानून के मुत़ाबिक़ गिज़ाओं और दवाओं वग़ैरा के पेकिटों पर इन्तिहाई तारीख़ (EXP. DATE) लिखी जाती है, बच्चा भी येह बात समझ सकता है कि कम्पनी वालों को चूंकि तजरिबा होता है कि येह चीज़ फ़ुलां तारीख़ तक ख़राब हो जाएगी, इस लिये लिख देते हैं, यक़ीनन कम्पनी के (EXP. DATE) लिखने ने उस चीज़ को ख़राब होने पर मजबूर नहीं किया, अगर वोह न लिखते तब भी उस चीज़ को अपनी मुद्दत पर ख़राब होना ही था।

तक़्दीर के बारे में एक अहम फ़त्वा

इस ज़िम्न में दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 692 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब, "**कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब**" सफ़हा 583 ता 585 पर लिखा है : **फ़तावा र-ज़विय्या** जिल्द 29 सफ़हा 284 ता 285 से एक सुवाल जवाब पेश किया जाता है। **सुवाल :** "ज़ैद" कहता है जो हुवा और होगा सब ख़ुदा के हुक्म से ही हुवा और होगा फिर बन्दे की क्यूं गरिफ़्त है और

इस को क्यूं सज़ा का मुर–तकिब ठहराया गया ? इस ने कौन सा काम ऐसा किया जो मुस्तह़िक़ अ़ज़ाब का हुवा ? जो कुछ उस (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ) ने **तक़्दीर** में लिख दिया है वोही होता है, क्यूं कि कु़रआने पाक से साबित हो रहा है कि बिला हु़क्म उस के एक ज़र्रा नहीं हिलता फिर बन्दे ने कौन सा अपने इख़्तियार से वोह काम किया जो दोज़ख़ी हुवा या काफ़िर या फ़ासिक़। जो बुरे काम **तक़्दीर** में लिखे होंगे तो बुरे काम करेगा और भले लिखे होंगे तो भले। बहर ह़ाल **तक़्दीर** का ताबेअ़ है फिर क्यूं इस को मुजरिम बनाया जाता है ? चोरी करना, ज़िना करना, क़त्ल करना वग़ैरा वग़ैरा जो बन्दे की **तक़्दीर** में लिख दिये हैं वोही करना है, ऐसे ही नेक काम करना है। **अल जवाब :** "ज़ैद गुमराह बे दीन है, उसे कोई जूता मारे तो क्यूं नाराज़ होता है ? येह भी तो **तक़्दीर** में था। उस का कोई माल दबाए तो क्यूं बिगड़ता है ? येह भी **तक़्दीर** में था, येह शैत़ानी फे़'लों का धोका है कि जैसा लिख दिया ऐसा हमें करना पड़ता है (ह़ालां कि हरगिज़ ऐसा नहीं) बल्कि जैसा हम करने वाले थे उस (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ) ने अपने इ़ल्म से जान कर वोही लिखा है।"

सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی **मक–त–बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ **बहारे शरीअ़त** ह़िस्सए अव्वल सफ़ह़ा 24 पर फ़रमाते हैं : "बुरा काम कर के **तक़्दीर** की त़रफ़ निस्बत करना और मशिय्यते इलाही के ह़वाले करना बहुत बुरी बात है, बल्कि हु़क्म येह है कि जो अच्छा काम करे उसे मिन जानिबिल्लाह (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की जानिब से) कहे और जो बुराई सरज़द हो उस को शामते नफ़्स तसव्वुर करे।"

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़फ़िरत है। (جامع صغیر)

तक़्दीर के बारे में वस्वसे का एक बेहतरीन इ़लाज

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 344 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "**मिन्हाजुल आ़बिदीन**" सफ़ह़ा 86 ता 87 पर **हुज्जतुल इस्लाम** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى ने जो कुछ बयान फ़रमाया उस का खुलासा है : इब्लीस बसा अवक़ात वस्वसे डाल कर यूं भी गुमराह करता है कि इन्सान के नेक व बद होने के **मु-तअ़ल्लिक़** रोज़े अज़ल में फ़ैसला हो चुका है, जो उस रोज़ **बुरों** में हो गया वोह "बुरा" ही रहेगा और जो **अच्छों** में हो गया वोह "अच्छा" ही रहेगा। तुम्हारे आ'माले नेक व बद से फ़ैसलए अ-ज़ली में हरगिज़ फ़र्क़ नहीं आ सकता। अगर **अल्लाह** तआ़ला बन्दे को इस **वस्वसए शैत़ान** से बचा ले और बन्दा इब्लीसे लईन को यूं जवाब दे कि "मैं तो **अल्लाह** तआ़ला का बन्दा हूं और बन्दे का काम है अपने मौला के हुक्म की ता'मील, और **अल्लाह** तआ़ला चूंकि **रब्बुल आ़-लमीन** है इस लिये जो चाहे हुक्म दे और जो चाहे करे और फिर इ़बादत व त़ाअ़त किसी त़रह़ भी मुज़िर (या'नी नुक़्सान देह) नहीं, क्यूं कि अगर मैं इ़ल्मे इलाही में **सई़द** (या'नी सआ़दत मन्द) हूं तो फिर भी और ज़ियादा सवाब का मोह़ताज हूं और अगर مَعَاذَ الله इ़ल्मे इलाही में मेरा नाम बद बख़्तों में लिखा हो तो भी नेक आ'माल करने से अपने ऊपर येह मलामत तो नहीं करूंगा कि मुझे **अल्लाह** तआ़ला त़ाअ़त व इ़बादत न करने पर सज़ा देगा और कम अज़ कम येह तो है कि ना फ़रमान बन कर जहन्नम में जाने की निस्बत मुत़ीअ़ (या'नी फ़रमां बरदार) बन कर जाना बेहतर है। लेकिन येह तो सब महूज़ एह़्तिमालात (या'नी शुबुहात) हैं, वरना उस का वा'दा ह़क़ है और उस का कलाम क़ुरआन

सच्चा है और **अल्लाह** तआ़ला ने जा ब जा त़ाआ़त व इ़बादात की बजा आ–वरी पर सवाबे जमील के वा'दे फ़रमाए हैं । तो जो शख़्स ईमान व त़ाअ़त (या'नी इ़बादत) के साथ रब तआ़ला के दरबार में ह़ाज़िर होगा, वोह हरगिज़ दोज़ख़ में न जाएगा बल्कि **अल्लाह** तआ़ला की मेहरबानी और आ'माले सालिह़ा (या'नी नेकियों) की वजह से **जन्नतुल फ़िरदौस** में اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ जगह पाएगा । लेकिन ह़क़ीक़त में येह दुख़ूल (या'नी दाख़िला) भी वा'दए ख़ुदा वन्दी की वजह से होगा । इसी सिद्क़े वा'दा (या'नी सच्चे वा'दे) का इज़्हार करने के लिये **अल्लाह** तआ़ला ने क़ुरआने मजीद (पारह 24 **सू-रतुज़्ज़ुमर** की आयत नम्बर 74) में सईद (या'नी सआ़दत मन्द) लोगों के इस मक़ूले (या'नी क़ौल) को नक़्ल फ़रमाया है :

وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ صَدَقَنَا وَعْدَهٗ (پ ۲۴، الزُّمر : ۷۴)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और वोह कहेंगे : सब ख़ूबियां **अल्लाह** को जिस ने अपना वा'दा हम से सच्चा किया ।

अल्लाह की रह़मत से तो जन्नत ही मिलेगी

ऐ काश ! मह़ल्ले में जगह उन के मिली हो (वसाइले बख़्शिश, स. 107)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ईमानिय्यात के बारे में वस्वसे

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बसा अवक़ात शैत़ान ऐसे ऐसे **वस्वसे** डालता है कि जिन को ज़बान से बयान करने की हिम्मत ही नहीं होती । चूंकि सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان **अल्लाह** व **रसूल** عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم की इत़ाअ़त में हर दम मश्ग़ूल रहते थे, इस

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिग़्फ़ार करते रहेंगे। (طبرانی)

लिये शैत़ान उन्हें **वस्वसों** के ज़रीए ख़ूब परेशान किया करता था। चुनान्चे **मुस्लिम शरीफ़** में है कि कुछ सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان मदीने के ताजदार, बे कसों के मददगार صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के दरबारे गोहर बार में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ गुज़ार हुए : हम अपने दिलों में ऐसे ख़याालात (वस्वसे) मह़सूस करते हैं कि इन्हें बयान करना बहुत बुरा मा'लूम होता है। हादिये राहे नजात, सरवरे काएनात, शाहे मौजूदात صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद : क्या तुम ने येह बात पाई है ? अ़र्ज़ किया : जी हां। फ़रमाया : "येह खुला हुवा **ईमान** है।" (صَحیح مُسلِم ص۸۰ حدیث۱۳۲)

ख़त़रनाक वस्वसे

बह़रो बर के बादशाह, दो आ़लम के शहन्शाह, उम्मत के ख़ैर ख़्वाह, बीबी आमिना के महरो माह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते अक़्दस में ह़ाज़िर हो कर एक शख़्स ने अ़र्ज़ की : मैं अपने दिल में ऐसे ख़यालात मह़सूस करता हूं कि वोह बोलने से **जल कर कोएला** हो जाना ज़ियादा पसन्द है। फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शुक्र है कि जिस ने इन ख़यालात को वस्वसा बना दिया। (السُّنّۃ لابی عاصم ص۱۰۷ حدیث۶۷۰)

मुफ़स्सिरे शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : या'नी रब عَزَّوَجَلَّ ने ऐसे ख़यालात को **वस्वसे** में दाख़िल फ़रमाया, जिन पर कोई पकड़ न रखी, वोह करीम عَزَّوَجَلَّ बन्दे की मजबूरी व मा'ज़ूरी जानता है। (मिरआत, जि. 1, स. 86)

वस्वसे मुआ़फ़ हैं

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ रिवायत फ़रमाते हैं कि

सरकारे अबद क़रार, शाफ़ेए रोज़े शुमार, बि इज़्ने परवर्द गार दो[2] आ़लम के मालिको मुख़्तार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : यक़ीनन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मेरे लिये मेरी उम्मत से इन के दिली ख़त़रात (या'नी वस्वसों) में दर गुज़र फ़रमा दी, जब तक उस पर काम या कलाम न करें।

(صَحیح بُخاری ج ۲ ص۱۵۳ حدیث۲۵۲۸)

मुफ़स्सिरे शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़त फ़रमाते हैं : बुरे ख़यालात पर पकड़ नहीं येह इस उम्मत की ख़ुसूसिय्यत है, पिछली उम्मतों में इस पर (या'नी वस्वसे दिल में जमाने या क़स्दन लाने पर) भी पकड़ थी। ख़याल रहे कि बुरे ख़यालात और हैं (और) बुरा इरादा कुछ और, बुरे इरादे पर पकड़ है ह़त्ता कि इरादए कुफ़्र "**कुफ़्र**" है। (मिरआत, जि. अव्वल, स. 81)

वस्वसे पर कब गिरिफ़्त है

मुह़क़्क़िक़े अ़लल इ़त्लाक़, ख़ातिमुल मुह़द्दिसीन, ह़ज़रते अ़ल्लामा **शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिसे देहलवी** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : जो बुरा ख़याल दिल में बे इख़्तियार व अचानक आ जाता है, उसे **हाजिस** कहते हैं, येह आनी फ़ानी होता है, आया और गया। येह पिछली उम्मतों पर भी मुआ़फ़ था और हम को भी मुआ़फ़ है, लेकिन जो दिल में बाक़ी रह जाए वोह हम पर मुआ़फ़ है, उन (उम्मतों) पर मुआ़फ़ न था। अगर इस के साथ दिल में लज़्ज़त और ख़ुशी पैदा हो उसे **हम्म** कहते हैं, इस पर भी पकड़ नहीं और अगर साथ (ही) कर गुज़रने का इरादा भी हो तो वोह **अ़ज़्म** है, इस की पकड़ है। (اَشِعَّةُ اللَّمعات ج ۱ ص۸۵)

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जो शख़्स मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया। (طبرانی)

वस्वसों से ईमान नहीं जाता

वस्वसे चाहे जितने ही आएं और कितने ही ख़त़रनाक हों उन से ईमान बरबाद नहीं होता ! **ईमानिय्यात** के तअ़ल्लुक़ से **वस्वसे** आने पर दिल परेशान होना इस बात की अ़लामत है कि दिल ईमान पर मुत़्मइन है। पारह 14 **सू-रतुन्नह़्ल** आयत नम्बर 106 में इर्शादे बारी तआ़ला है :

وَقَلْبُہٗ مُطْمَئِنٌّۢ بِالْاِیْمَانِ
(پ ۱۴، النّحل ۱۰۶)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और उस का दिल ईमान पर जमा हुवा हो।

वस्वसों को बुरा समझना ऐ़न ईमान है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ईमान के बारे में वस्वसे आना तो कमाले ईमान की अ़लामत है, चोर डाकू वहीं जाते हैं जहां दौलत की रेलपेल होती है, तो जहां **ईमान** जितना ज़ियादा मज़बूत़ होगा, शैत़ान उसी क़दर ज़ियादा तंग करेगा। किसी मुसल्मान का **वस्वसों** पर घबराना, परेशान होना, रो रो कर शैत़ान मरदूद से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की पनाह त़लब करना दर ह़क़ीक़त **क़ुव्वते ईमानी** की निशानी है। **मुफ़स्सिरे** शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : "वस्वसों को बुरा समझना ऐ़न ईमान है।"

(मिरआतुल मनाजीह़, जि. 1, स. 82)

इस्तिक़ामत दीजिये इस्लाम पर — कीजिये रह़मत ऐ नानाए ह़ुसैन
दिल से दुन्या की हवस सब दूर हो — कीजिये रह़मत ऐ नानाए ह़ुसैन

नज़्अ़, क़ब्रो ह़श्र, मीज़ां हर जगह

कीजिये रह़मत ऐ नानाए ह़ुसैन

(वसाइले बख़्शिश, स. 93)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

इ़बादात में वस्वसे

ईमानिय्यात की त़रह़ ''इ़बादात'' में भी शैत़ान **वस्वसे** डालता है और इस मुआ़–मले में वोह अकेला नहीं, उस के हमराह एक मुनज़्ज़म जमाअ़त है। **मुफ़स्सिरे** शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : ज़ुर्रिय्यते शैत़ान (या'नी औलादे इब्लीस) की मुख़्तलिफ़ जमाअ़तें हैं, इन के नाम और काम अलग अलग हैं, चुनान्चे ''वुज़ू'' में बहकाने वाली जमाअ़त का नाम **वल्हान** है और ''नमाज़'' में वर–ग़लाने वाली जमाअ़त का नाम **ख़िन्ज़ब** है। ऐसे ही मस्जिदों में, बाज़ारों में, शराब ख़ानों में इस की अलग अलग फ़ौजें रहती हैं।

(मिरआत, जि. 1, स. 85)

9 शैत़ानों के नाम व काम

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक–त–बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 1548 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, ''**फ़ैज़ाने सुन्नत**'' सफ़ह़ा 40 ता 41 पर है : **अमीरुल मुअमिनीन** ह़ज़रते सय्यिदुना उ़–मरे फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ फ़रमाते हैं कि शैत़ान की औलाद **नव** हैं : (1) **ज़लीतून** (2) वसीन (3) लक़ूस (4) **आ'वान** (5) हफ़्फ़ाफ़ (6) मुर्रह (7) मुसव्वित (8) दासिम और (9) वल्हान

﴾1﴿ **ज़लीतून :** बाज़ारों में मुक़र्रर है, और वहां अपना झन्डा गाड़े रहता है ﴾2﴿ **वसीन :** इस की लोगों को ना गहानी आफ़ात में मुब्तला करने की ड्यूटी है ﴾3﴿ **लकूस :** आतश परस्तों पर **मु-तअय्यन** (या'नी मुक़र्रर) है ﴾4﴿ **आ'वान :** हुक्मरानों के साथ होता है ﴾5﴿ **हफ़्फ़ाफ़ :** शराबियों के हमराह रहता है ﴾6﴿ **मुर्रह :** गाने बाजे, बजाने वालों पर मुक़र्रर है ﴾7﴿ **मिस्वत़ :** अफ़्वाहें आ़म करने की ज़िम्मेदारी पर मामूर है, लोगों की ज़बानों पर अफ़्वाहें जारी करवा देता है, और अस्ल ह़क़ीक़त से लोग बे ख़बर रहते हैं ﴾8﴿ **दासिम :** घरों में ड्यूटी देता है। अगर साहिबे ख़ाना घर में दाख़िल हो कर न सलाम करे और न **बिस्मिल्लाह** पढ़ कर क़दम अन्दर रखे, तो येह उन घर वालों को आपस में लड़वा देता है, ह़त्ता कि मारपीट बल्कि त़लाक़ या ख़ुल्अ़ तक नौबत पहुंच जाती है ﴾9﴿ **वल्हान :** वुज़ू में "वस्वसे" डालने के लिये मुक़र्रर है। (المنبهات ص ۹۳)

नफ़्सो शैत़ान हो गए ग़ालिब

इन के चुंगल से तू छुड़ा या रब (वसाइले बख़्शिश, स. 51)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मसाजिद में वस्वसे

वस्वसे डालने की शैत़ानी तह़रीक मस्जिदों के अन्दर ख़ूब ज़ोरों पर होती है, वहां मौजूद कई मुसल्मानों को दुन्यवी बातों में लगा देता है, बा'ज़ों को लड़वा देता है, बा'ज़ बड़े बूढ़ों को ग़ुस्सा दिलवा कर शोर मचवा देता है, مَعَاذَ اللّٰه बा'ज़ों को बद निगाही, बद अख़्लाक़ी, ग़ीबत व

चुग़ली वग़ैरा वग़ैरा गुनाहों में फंसा देता है, जिन्हें गुनाहों में नहीं फंसा पाता उन्हें नेकियों की कमी में मुब्तला कर देता है और इस का तो शायद हर एक को तजरिबा होगा। म-सलन दर्सो बयान का सिल्सिला हो रहा है मगर मस्जिद में मौजूद होने के बा वुजूद बा'ज़ लोग शिर्कत से मह़रूम दूर बैठे ला परवाही के साथ इधर उधर देख रहे होते हैं। जो लोग मस्जिद में ह़ाज़िर होने के बा वुजूद यादे इलाही से ग़ाफ़िल और इ़ल्मी ह़ल्क़ों वग़ैरा से काहिल रहते हैं वोह **फ़तावा र-ज़विय्या** शरीफ़ में बयान कर्दा इस ह़दीसे पाक को ग़ौर से पढ़ें : **ह़ज़रते** सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ रिवायत फ़रमाते हैं कि मक्की म-दनी सरकार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم इर्शाद फ़रमाते हैं कि जब तुम में कोई मस्जिद में होता है, शैत़ान आ कर उस के बदन पर हाथ फैरता है, जैसे तुम में कोई अपने घोड़े को राम (या'नी फ़रमां बरदार व मुत़ीअ़) करने के लिये उस पर हाथ फैरता है। पस अगर वोह शख़्स ठहरा रहा (या'नी उस के **वस्वसे** से फ़ौरन अलग न हो गया) तो उसे बांध लेता या लगाम दे देता है। **ह़ज़रते** सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि (इस) ह़दीस की तस्दीक़ तुम अपनी आंखों से देख रहे हो, वोह जो बंधा हुवा है उसे तुम देखोगे यूं झुका हुवा कि ज़िक्रे इलाही नहीं करता और वोह जो लगाम दिया हुवा है वोह मुंह खोले है **अल्लाह** तआ़ला का ज़िक्र नहीं करता। [مُسند امام احمد، حدیث۸۳۷۸]

(फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जिल्द अव्वल, स. 771 ता 772)

गन्दे गन्दे वसाविस आते हैं
मेरे दिल से इन्हें निकाल आक़ा (वसाइले बख़्शिश, स. 209)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ग़ुस्ल में वस्वसे

ग़ुस्ल में भी शैत़ान शक पैदा करता है, म-सलन कभी **वस्वसा** आता है कि शायद पीठ सूखी रह गई, शायद सर के बाल सह़ीह़ त़रह़ नहीं धुले, फ़ुलां उ़ज़्व ख़ुश्क रह गया है वग़ैरा। ह़ालां कि ऐसा नहीं होता, अगर उस ह़िस्से को मल कर अच्छी त़रह़ धो लिया है तो शक में पड़ने की ज़रूरत नहीं।

ग़ुस्ल में वस्वसे आने का एक सबब

याद रहे कि ग़ुस्ल ख़ाने में पेशाब करने से **वस्वसे** पैदा होते हैं, लिहाज़ा इस से बचा जाए, जैसा कि **सरकारे** वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए़ रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर्द गार صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "कोई ग़ुस्ल ख़ाने में हरगिज़ पेशाब न करे फिर उस में नहाए या वुज़ू करेगा, क्यूं कि आ़म **वस्वसे** इसी से होते हैं।" (سُنَنِ ابوداوٗد ج۱ ص٤٤ حدیث ٢٧)

ह़दीसे पाक की शर्ह़

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 308 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "**इस्लामी बहनों की नमाज़** (ह़-नफ़ी)" सफ़ह़ा 201 ता 202 पर है, **मुफ़स्सिरे** शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : अगर ग़ुस्ल ख़ाने की ज़मीन पुख़्ता (या'नी पक्की) हो और उस में पानी ख़ारिज होने की नाली भी हो (और फ़र्श का ढलवान या'नी slope भी सह़ीह़ हो कि पेशाब वग़ैरा सीधा नाली में

जाएगा) तो (ऐसी सूरत में) वहां (छींटों वग़ैरा से ख़ुद को बचाते हुए) पेशाब करने में ह़रज नहीं अगर्चे बेहतर है कि न करे, लेकिन अगर ज़मीन कच्ची (या ना हमवार) हो और पानी निकलने का रास्ता भी न हो तो पेशाब करना सख़्त बुरा है कि ज़मीन **नजिस** हो जाएगी, और ग़ुस्ल या वुज़ू में गन्दा पानी जिस्म पर पड़ेगा । यहां दूसरी सूरत ही मुराद है इस लिये ताकीदी मुमा-न-अ़त फ़रमाई गई । या'नी इस से **वस्वसों** और वह्म की बीमारी पैदा होती है जैसा कि तजरिबा है या गन्दी **छींटें** पड़ने का **वस्वसा** रहेगा ।

(मिरआत, जि. 1, स. 266)

वस्वसे की तबाह कारी की ह़िकायत

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن **फ़तावा र-ज़विय्या** जिल्द अव्वल सफ़ह़ा 1043 जुज़ **"ب"** पर **वस्वसे का बेहतरीन इ़लाज** बयान करते हुए फ़रमाते हैं : वस्वसे की न सुनना उस पर अ़मल न करना उस के ख़िलाफ़ करना (भी वस्वसे का इ़लाज है) । इस बलाए अ़ज़ीम (या'नी वस्वसे) की आ़दत है कि जिस क़दर इस (या'नी वस्वसे) पर अ़मल हो उसी क़दर बढ़े और जब क़स्दन इस का ख़िलाफ़ किया जाए तो **बि इज़्निही तआ़ला** थोड़ी मुद्दत में बिल्कुल दफ़्अ़ हो जाए । (ह़ज़रते सय्यिदुना) अ़म्र बिन मुर्रह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : "शैत़ान जिसे देखता है कि मेरा **वस्वसा** उस में कारगर होता है सब से ज़ियादा उसी के पीछे पड़ता है ।" (مصنّف ابن ابی شیبہ ج۱ ص۲۲۴)

इमाम इब्ने ह़जर मक्की (عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى) अपने ''फ़तावा'' में फ़रमाते हैं कि मुझ से बा'ज़ सिक़ा (या'नी क़ाबिले ए'तिमाद) लोगों ने बयान किया कि ''दो वस्वसे वालों'' को नहाने की ज़रूरत हुई, **दरियाए नील** पर गए, तुलूए़ सुब्ह़ के बा'द पहुंचे, एक ने दूसरे से कहा : तू उतर कर ग़ोते़ लगा मैं गिनता जाऊंगा और तुझे बताऊंगा कि पानी तेरे सारे सर को पहुंचा या नहीं। वोह उतरा और ग़ोते़ लगाना शुरूअ़ किये, और येह (या'नी जो बाहर है वोह) कह रहा है कि अभी थोड़ी सी जगह तेरे सर में बाक़ी है, वहां पानी न पहुंचा, एक को **सुब्ह़ से दोपहर** हो गई, आख़िर थक कर बाहर आया और दिल में शक रहा कि ग़ुस्ल उतरा या नहीं ? फिर उस ने दूसरे से कहा कि अब तू उतर मैं गिनूंगा। उस ने डुब्कियां लगाईं और येह (पहला) कहता जाता है कि अभी सारे सर को पानी न पहुंचा, यहां तक कि **दोपहर से शाम** हो गई, मजबूरन वोह (दूसरा) भी दरिया से निकल आया और दिल में शुब्हे का शुबा ही रहा। दिन भर की नमाज़ें खोईं, और ग़ुस्ल उतरने पर यक़ीन न होना था और न हुवा। وَالْعِيَاذُ بِاللّٰهِ تَعَالٰى (या'नी : हम **अल्लाह** तआ़ला की पनाह मांगते हैं) येह वस्वसा मानने का नतीजा था।

(حديقه نديه شرح طريقه محمديه ج٢ ص ٦٩١)

मुझे वस्वसों से बचा या इलाही
पए ग़ौसो अह़मद रज़ा या इलाही

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

वुज़ू में वस्वसे

वल्हान नामी शैत़ान, **वुज़ू** के बारे में मुख़्तलिफ़ **वस्वसे** दिलाता है, म-सलन दौराने **वुज़ू** शक डालता है कि फ़ुलां उ़ज़्व धुलने से रह गया,

फुलां उ़ज़्व तीन के बजाए दो बार धुला है, इसी त़रह़ बा वुज़ू शख़्स को भी **वस्वसा** डालता है कि तेरा **वुज़ू** टूट गया, **वुज़ू** किये हुए इतना इतना वक़्त गुज़र चुका है अब **वुज़ू** कहां रहा होगा ! वग़ैरा वग़ैरा, ऐसी सूरत में शैत़ान के **वस्वसे** की त़रफ़ बिल्कुल तवज्जोह नहीं देनी चाहिये। **वुज़ू** में वस्वसे डालने वाले शैत़ान के बारे में **शहन्शाहे मदीना**, क़रारे क़ल्बो सीना, साह़िबे मुअ़त्त़र पसीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा क़रीना है : **वुज़ू** के लिये एक शैत़ान है जिस का नाम "**वल्हान**" है, लिहाज़ा तुम पानी के वस्वसों से बचो।

(سُنَنِ اِبن ماجه ج١ ص٢٥٢ حديث ٤٢١)

रूमाली पर पानी छिड़कना

अगर वुज़ू के बा'द क़त़रे का वह्म पड़ता रहता हो तो इस **वस्वसए शैत़ानी** से बचने का एक त़रीक़ा येह भी है कि वुज़ू के बा'द अपने पाजामे या शलवार की रूमाली (या'नी शर्मगाह के क़रीबी कपड़े) पर पानी छिड़क ले। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ रिवायत फ़रमाते हैं कि ताजदारे मदीना صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जब तू वुज़ू करे तो छींटा दे ले। (اِبن ماجه ج١ ص٢٧٠ حديث ٤٦٣) **फिर** अगर क़त़रे का **वस्वसा** हो तो ख़याल कर लीजिये कि पानी जो छिड़का था येह उस का असर है। हां जिस को **वाक़ेई क़त़रा** आता है तो उस की बात जुदा है।

वुज़ू में वस्वसा आए तो क्या करे ?

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक येह तुम्हारे लिये त़हारत है । (ابویعلی)

मत़्बूआ़ 1250 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "**बहारे शरीअ़त**" जिल्द अव्वल सफ़ह़ा 310 पर **सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्तरीक़ह** ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "अगर दरमियाने **वुज़ू** में किसी उ़ज़्व के धोने में शक वाक़ेअ़ हो और येह ज़िन्दगी का पहला वाक़िआ़ है तो उस को धो ले और अगर अक्सर शक पड़ा करता है तो उस की त़रफ़ इल्तिफ़ात (या'नी तवज्जोह) न करे । यूहीं अगर बा'दे **वुज़ू** शक है कि **वुज़ू** है या टूट गया तो **वुज़ू** करने की उसे ज़रूरत नहीं । हां कर लेना बेहतर है, जब कि ये शुबा बत़ौरे **वस्वसा** न हुवा करता हो और अगर वस्वसा है तो उसे हरगिज़ न माने, इस सूरत में एह़तियात़ समझ कर **वुज़ू** करना एह़तियात़ नहीं बल्कि शैत़ाने लईन की इत़ाअ़त है ।"

तू वुज़ू के वस्वसों से या ख़ुदा मुझ को बचा
साथ ज़ाहिर के मेरा बात़िन भी हो जाए सफ़ा

नमाज़ में वुज़ू टूटने के वस्वसे

नमाज़ में शैत़ान कभी **वस्वसा** डालता है कि वुज़ू टूट गया, कभी पेशाब का क़त़रा निकलने तो कभी रीह़ ख़ारिज होने का दिल में शुबा डालता है। **चुनान्चे** इस ज़िम्न में मेरे आक़ाए ने'मत, आ'ला ह़ज़रत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, आ़शिक़े माहे नुबुव्वत, परवानए शम्ए़ रिसालत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن चन्द अह़ादीसे मुबा-रका नक़्ल करने के बा'द इर्शाद फ़रमाते हैं : इन **ह़दीसों का ह़ासिल** येह है कि शैत़ान नमाज़ में धोका देने के लिये कभी इन्सान की शर्मगाह पर आगे से थूक देता है कि उसे **क़त़रा** आने का गुमान होता है, कभी पीछे फूंकता, या बाल खींचता है कि **रीह़** ख़ारिज होने का ख़याल

गुज़रता है । इस (त़रह़ के वस्वसे आने) पर हुक्म हुवा कि नमाज़ से न फिरो, जब तक तरी या आवाज़ या बू न पाओ, जब तक वुक़ूए ह़दस (या'नी वुज़ू टूटने) पर **यक़ीन** न हो ले । (फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 1, स. 774)

शैत़ान से कह दीजिये : "तू झूटा है"

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जब तक वुज़ू टूटने का ऐसा यक़ीन न हो कि जिस पर क़सम खाई जा सके उस वक़्त तक वुज़ू नहीं जाता, शैत़ान जब कहे : तेरा वुज़ू जाता रहा तो दिल में जवाब दीजिये कि **ख़बीस तू झूटा है** और अपनी नमाज़ में मश्ग़ूल रहिये, जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ रिवायत करते हैं कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर्द गार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जब तुम में से किसी के पास शैत़ान आ कर **वस्वसा** डाले कि तेरा वुज़ू जाता रहा तो फ़ौरन उसे दिल में जवाब दे कि **तू झूटा है ।** यहां तक कि अपने कानों से आवाज़ न सुन ले या अपनी नाक से बू न सूंघ ले ।

(الاحسان بترتيب صحيح ابن حِبّان ج٤ص١٥٣حديث٢٦٥٦)

मैं नाक़िस मेरा अ़मल नाक़िस

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत इमामे अहले सुन्नत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : "अगर फिर भी शैत़ान **वस्वसा** डाले कि तूने येह अ़मल कामिल (या'नी पूरा) न किया, इस में फ़ुलां नक़्स (या'नी ऐ़ब) रह गया तो शैत़ान

से कह दे कि अपनी दिलसोज़ी उठा रखे (या'नी शैतान अपनी हमदर्दी अपने पास ही रखे, मुझे बताने की हाजत नहीं और मेरे लिये दिल जलाने की कोई ज़रूरत नहीं), मुझ से तो इतना ही हो सकता है, अगर (मेरा अ़मल) नाक़िस है तो मैं ख़ुद भी तो नाक़िस हूं, अपने लाइक़ मैं बजा लाया, मेरा मौला عَزَّ وَجَلَّ करीम है। मेरे इज्ज़ व ज़ो'फ़ (या'नी मेरी बे बसी और कमज़ोरी) पर रहम फ़रमा कर इतना ही क़बूल फ़रमा लेगा, उस की अ़-ज़मत के लाइक़ कौन बजा ला सकता है ! **अगर** ऐसा करने से भी **वस्वसा** न टले तो कह दे कि अगर तेरे कहने से मेरा वुज़ू न हुवा, मेरी नमाज़ (न हुई तो) न सही मगर मुझे तेरे ख़याल के मुताबिक़ बे वुज़ू या ज़ोहर की तीन रक्अ़त पढ़ना गवारा है और **ऐ मल्ऊ़न !** तेरी इताअ़त क़बूल नहीं। जब यूं दिल में ठान ली तो **वस्वसे** की जड़ कट जाएगी। और بِعَوْنِہٖ تعالٰی (या'नी **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की मदद से) दुश्मन (शैतान) ज़लीलो ख़्वार पस्पा होगा।" (मुलख़्ख़स अज़ फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 1, स. 786, 787)

हज़रते सय्यिदुना इमाम मुजाहिद عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْوَاحِد के फ़रमान का भी येही मत़लब है कि आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मुझे बे वुज़ू नमाज़ पढ़ लेनी इस से ज़ियादा पसन्द है कि **शैतान** की **इताअ़त** करूं। (यहां हक़ीक़त में **बे वुज़ू** नमाज़ पढ़ना मुराद नहीं शैतान का **वस्वसा** दफ़्अ़ करना मक़्सूद है) (الطریقۃ المحمدیہ مع شرحہ الحدیقۃ الندیۃ ج۲ص۶۸۸)

जा मैं बे वुज़ू ही नमाज़ पढ़ूंगा

सय्यिदुना इमामे आ'ज़म عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْاَکْرَم के **उस्ताज़ुल उस्ताज़**, इमामे अजल इब्राहीम **नख़्ई** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : शैतान के वस्वसे पर अ़मल न करो, अगर वोह ज़ियादा परेशान करे तो उस से कह दो :

"**मैं बे वुज़ू ही पढ़ूंगा तेरी न सुनूंगा।**" यूं वोह ख़बीस बाज़ आता है और इस की सुनो तो और ज़ियादा परेशान करता है।

मैं तेरी इत़ाअ़त करूं या इलाही
न शैत़ां की हरगिज़ सुनूं या इलाही

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

नमाज़ में वस्वसे

नमाज़ में भी शैत़ान तंग करता और ध्यान बटाता रहता है। "मुस्लिम शरीफ़" की रिवायत है कि ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन अबिल आ़स رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं कि मैं ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! शैत़ान मुझ में और मेरी नमाज़ और तिलावत में ह़ाइल हो गया, नमाज़ **मुश्तबह** (या'नी मश्कूक) कर दी। ह़ुज़ूरे अकरम, **नूरे मुजस्सम** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : इस शैत़ान को **ख़िन्ज़ब** कहा जाता है, जब कभी तुम इसे मह़सूस करो तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की पनाह मांगो और बाईं त़रफ़ तीन बार थुत्कार दो। चुनान्चे मैं ने येही किया तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उसे दफ़्अ़ फ़रमाया।

(صَحیح مُسلِم ص۱۲۰۹ حدیث۲۲۰۳)

नमाज़ में आने वाले वस्वसों से बचने का त़रीक़ा

मुफ़स्सिरे शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان मज़्कूरा ह़दीसे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : **नमाज़** शुरूअ़ करते वक़्त तक्बीरे तह़रीमा से क़ब्ल, तजरिबा है कि जो तह़रीमा (या'नी

नमाज़ शुरूअ़ करने) से पहले इस त़रह़ (या'नी उलटी त़रफ़ तीन बार) थुत्कार कर **लाह़ौल शरीफ़** (या'नी لَاحَوْلَ وَلَاقُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْم) पढ़ ले फिर तह़रीमा करे (या'नी नमाज़ शुरूअ़ करे), दौराने नमाज़ में निगाह की ह़िफ़ाज़त करे (वोह यूं) कि **क़ियाम** में सज्दा गाह (या'नी सज्दे की जगह) रुकूअ़ में पुश्ते क़दम (या'नी पाउं के पन्जे की ऊपरी सत़ह़), **सज्दे** में नाक के बांसे (या'नी नाक की हड्डी पर), **जल्सा** (या'नी दो सज्दों के दरमियान बैठने में) और **क़ा'दह** (या'नी **अत्तह़िय्यात** वग़ैरा पढ़ने) में गोद में (नज़र) रखे तो اِنْ شَآءَ اللّٰه नमाज़ में हुज़ूरे (क़ल्ब या'नी ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़) नसीब होगा । (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 1, स. 89)

थूक शैत़ान के मुंह में पड़ेगा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मिश्कात शरीफ़ के ''बाबुल वस्वसा'' में मुन्दरज (या'नी दर्ज कर्दा) एक और ह़दीसे पाक कि जिस में ''इ़लाजे वस्वसा'' के लिये बाईं त़रफ़ **तीन बार थुत्कारने** का तज़्किरा है, उस के तह़्त **मुफ़स्सिरे** शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : येह थूक शैत़ान के मुंह पर पड़ेगा, जिस से वोह ज़लील हो कर भागेगा क्यूं कि शैत़ान अक्सर बाईं (या'नी उलटी) त़रफ़ से आता है । इस से मा'लूम हुवा कि कभी थूक से भी शैत़ान भागता है । (मिरआत, जिल्द अव्वल, स. 88)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ सगे मदीना عُفِیَ عَنْهُ का बारहा का तजरिबा है कि जब इस्तिन्जा ख़ाने में शैत़ान के वस्वसे आते हैं तो उलटे कन्धे की त़रफ़

तीन बार थुत्कार देने से शैतान ज़लील हो कर भागता है । (इस्तिन्जा ख़ाने में लाहौल शरीफ़ वग़ैरा पढ़ना मन्अ़ है)

न वस्वसे आएं न मुझे गन्दे ख़यालात
कर ज़ेह्न का अल्लाह अ़ता क़ुफ़्ले मदीना

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

रक्अ़तों के बारे में वस्वसे

शैतान नमाज़ में वस्वसे डाल कर इस की रक्अ़तों में भी शक पैदा कर देता है । ह़दीसे पाक में है कि एक शख़्स ने बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हो कर **वस्वसे** की शिकायत की, कि नमाज़ में पता नहीं चलता दो पढ़ीं या तीन । **हु़ज़ूर** नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम عَلَیْہِ اَفْضَلُ الصَّلٰوۃِ وَالتَّسْلِیْم ने इर्शाद फ़रमाया : जब तू ऐसा पाए तो अपनी दाहनी (या'नी सीधी) अंगुश्ते शहादत (या'नी शहादत की उंगली) उठा कर अपनी बाईं (या'नी उलटी) रान में मार और **बिस्मिल्लाह** कह कि वोह शैतान के ह़क़ में छुरी है । (اَلْمُعْجَمُ الْکَبِیر لِلطَّبَرانی ج۱ص۲۹۲حدیث۲۱ ۵) लिहाज़ा जिसे नमाज़ में वस्वसों की आ़दत हो उसे चाहिये कि नमाज़ शुरूअ़ करने से क़ब्ल येह अ़मल कर ले ।

रक्अ़तों में शक का मस्अला

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 1250 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, **"बहारे शरीअ़त"** जिल्द अव्वल सफ़ह़ा 718 पर **सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्तरीक़ह** ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : जिस को शुमारे रक्अ़त में शक हो, म-सलन तीन[3] हुईं या चार[4] और

बुलूग़ (या'नी बालिग़ होने) के बा'द येह पहला वाक़िआ़ है तो सलाम फैर कर या कोई अ़मल मुनाफ़िये नमाज़ (या'नी जो नमाज़ से बाहर कर दे ऐसा फ़े'ल) कर के तोड़ दे या गुमाने ग़ालिब के ब मूजब पढ़ ले मगर बहर सूरत इस नमाज़ को सिरे से पढ़े। मह़्ज़ तोड़ने की निय्यत काफ़ी नहीं। और अगर येह शक पहली बार नहीं बल्कि पेशतर (या'नी इस से क़ब्ल) भी हो चुका है तो अगर गुमाने ग़ालिब किसी त़रफ़ हो तो उस पर अ़मल करे वरना कम की जानिब को इख़्तियार करे, या'नी तीन और चार में शक हो तो तीन क़रार दे, दो और तीन में शक हो तो दो। وَعَلٰی ھٰذَا الْقِیَاس (या'नी और इसी अन्दाज़े के मुत़ाबिक़) और तीसरी चौथी दोनों में क़ा'दह करे (या'नी अत्तह़िय्यात में बैठे) कि तीसरी[3] रक्अ़त का चौथी[4] होना मुह़्तमल है (या'नी तीसरी के चौथी होने का इम्कान है) और चौथी में क़ा'दे के बा'द **सज्दए सह्व** कर के सलाम फैर दे। अलबत्ता गुमाने ग़ालिब की सूरत में सज्दए सह्व नहीं।

शैत़ान के लिये बाइ़से ज़िल्लतो ख़्वारी

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن इर्शाद फ़रमाते हैं : तीन[3] और चार[4] रक्अ़त में शक हो तो तीन क़रार दे कर एक रक्अ़त और पढ़ ले फिर सज्दए सह्व कर ले, अब अगर वाक़ेई़ इस की पांच[5] हुईं तो येह दोनों सज्दे गोया एक रक्अ़त के क़ाइम हो कर इस की नमाज़ का दोगाना पूरा कर देंगे। एक रक्अ़त अकेली न रहेगी जो शरअ़न बात़िल है बल्कि इन सज्दों से मिल कर गोया एक नफ़्ल दोगाना जुदागाना हो जाएगा। अगर वाक़ेई़ चार हुईं

तो येह सज्दे शैत़ान की ज़िल्लत व ख़्वारी होंगे कि इस ने शक डाल कर नमाज़ बात़िल करनी चाही थी । (फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 1, स. 726)

बुज़ुर्ग ने शैत़ान को ना मुराद लौटा दिया

एक बुज़ुर्ग के पास नमाज़ के बा'द शैत़ान ने आ कर कहा : आप ने येह नमाज़ स़ह़ीह़ त़रह़ नहीं पढ़ी लिहाज़ा इसे दोबारा पढ़िये । जवाब दिया : मैं हरगिज़ येह नमाज़ दोबारा नहीं पढ़ूंगा क्यूं कि जैसी मैं पढ़ सकता था वैसी मैं ने पढ़ ली अगर इस में कमी रह गई है तो मैं अपने रब عَزَّوَجَلَّ से इस की मुआ़फ़ी मांग लूंगा । शैत़ान ने कहा : नमाज़ जैसी अ़ज़ीम इ़बादत के मुआ़-मले में सुस्ती मत कीजिये येह सुस्ती का मौक़अ़ नहीं आप दोबारा नमाज़ पढ़ लीजिये । फ़रमाया : जो होना था वोह हो गया मैं येह नमाज़ दोबारा कभी भी नहीं पढ़ूंगा । शैत़ान ने फिर कहा : देखिये मैं आप की भलाई की ख़ात़िर नसीह़त कर रहा हूं मैं आप का ख़ैर ख़्वाह हूं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में आप का मक़ाम व मरतबा बहुत बुलन्द है नमाज़ एक अ़ज़ीम इ़बादत है आप जैसे नेक बन्दे को नमाज़ के मुआ़-मले में ज़िद नहीं करनी चाहिये । बुज़ुर्ग ने शैत़ान को ज़ेर करने के लिये कहा : चाहे कुछ भी हो जाए मैं येह नमाज़ दोबारा नहीं पढ़ूंगा, रही बारगाहे इलाही में बुलन्द मरतबे वाली बात तो मैं उस की बारगाह में बुलन्दी के बजाए पस्ती ही पर ख़ुश हूं । शैत़ान ने कहा : **अल्लाह** तआ़ला ऐसी नमाज़ क़बूल ही नहीं फ़रमाता । कहा : मेरा रब बहुत करीम है वोह अपने करम से मेरे इस नाक़िस अ़मल को भी क़बूल फ़रमा लेगा, जो मुझ से हो सका वोह मैं ने कर लिया अब क़बूल करना उस का काम

है। अब तू यहां से दफ़्अ़ हो जा, मैं तेरे वस्वसों में आ कर कभी भी इस नमाज़ को नहीं दोहराऊंगा। बिल आख़िर जब शैत़ान ने अपनी नाकामी देखी तो ज़लीलो ख़्वार हो कर वापस चला गया।

ख़याल रहे ! उन बुज़ुर्ग की उसे सख़्ती से रद करने से ग़रज़ येह थी कि शैत़ान को ज़लील किया जाए, उस के वस्वसे को दफ़्अ़ किया जाए और उस के रास्ते को बन्द किया जाए। येह ग़रज़ न थी कि अ़मल ना दुरुस्त और ना मुकम्मल रहने दिया जाए और सुस्ती और ला परवाई को रवा रखा जाए और फ़रेबे नफ़्स और क-रमे ख़ुदा वन्दी के बहाने पर ए'तिमाद कर लिया जाए कि जैसी तैसी ग़लत़ नमाज़ अदा की जाए इसी पर किफ़ायत कर ली जाए और दिल को तसल्ली देने के लिये येह कहा जाए कि अल्लाह करीम है बख़्श देगा। (اشعہ ج۱ص۹۲)

वस्वसे का अनोखा रद

एक बुज़ुर्ग को अक्सर येह वस्वसा आता कि जहां मैं नमाज़ पढ़ता हूं वोह जगह नापाक है तो उन्हों ने इस वस्वसे को इस त़रह़ दूर किया कि जान बूझ कर वहीं नमाज़ पढ़ते जिस जगह की नापाकी का शक व शुबा होता था। (اشعہ ج۱ص۹۳)

वस्वसे की त़रफ़ ध्यान ही मत करो

एक शागिर्द ता'लीम मुकम्मल करने के बा'द वत़न लौटने लगा तो उस्ताज़े मोह़तरम ने पूछा : जब इ़बादत के दौरान शैत़ान **वस्वसा** डालता है तो क्या करते हो ? अ़र्ज़ की : उसे दूर करता हूं। पूछा : अगर

फिर वस्वसा डाले तो ? जवाब दिया : उसे दोबारा दफ़्अ़ करता हूं। तीसरी मरतबा दरयाफ़्त किया : अगर सेहबारा (या'नी तीसरी[3] मरतबा) वस्वसा डाले तो ? कहा : तो भी उसे दूर करता हूं। उस्ताज़े मोह़तरम ने नसीह़त फ़रमाई : जब शैत़ान तुम्हें इ़बादत में वस्वसे डाले तो उस पर तवज्जोह न दो क्यूं कि अगर तुम उस के वस्वसों को रोकने में लग गए तो वोह तुम्हें इसी काम में लगाए रखेगा बल्कि तुम उस से "चरवाहे के कुत्ते" का सा सुलूक करो कि **उस की त़रफ़ ध्यान ही न करो** और उस से **अल्लाह** तआ़ला की पनाह मांगो। (या'नी اَعُوْذُ بِاللّٰه (पूरी) पढ़ लिया करो)

(روحُ البیان ج ۱ ص ٦ بِتَصَرُّف)

नमाज़ों में शैत़ां ख़लल डालता है
मुझे इस के शर से बचा या इलाही

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

त़हारत के बारे में वस्वसे

शैत़ान त़हारत के मुआ़-मले में भी **वस्वसे** डालता और शुकूक व शुबुहात पैदा करता है कि येह नापाक है, वोह नापाक है। आप वस्वसों की त़रफ़ तवज्जोह मत दीजिये, त़हारत के मुआ़-मले में शरीअ़ते मुत़ह्हरा ने हमारे लिये बहुत ज़ियादा आसानी रखी है, मगर इ़ल्मे दीन की कमी की वजह से बा'ज़ लोग **वस्वसों** का शिकार हो जाते हैं। येह शर-ई़ मस्अला ज़ेह्न नशीन फ़रमा लीजिये कि जब तक किसी शै का नापाक होना यक़ीनी त़ौर पर मा'लूम न हो जाए फ़क़त़ शक की बुन्याद पर उसे

नापाक नहीं कह सकते बल्कि किसी चीज़ के नापाक होने की टोह में पड़ने की भी ज़रूरत नहीं।

नजासत के बारे में तह़क़ीक़ की ह़ाजत नहीं

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम **अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن **फ़तावा र-ज़विय्या** जिल्द 4 सफ़ह़ा 515 पर नक़्ल करते हैं **:** अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना **उ़-मरे फ़ारूक़** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ **एक ह़ौज़** पर गुज़रे (वोह ह़ौज़ दह दर दह से छोटा था और ठहरे पानी के हुक्म में था और ठहरे पानी में से अगर दरिन्दा पानी पी ले तो वोह नापाक हो जाता है) **अ़म्र** बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ (जो कि) साथ थे। (वोह) ह़ौज़ वाले से पूछने लगे **:** क्या तेरे ह़ौज़ में दरिन्दे भी पानी पीते हैं ? (अमीरुल मुअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने) फ़रमाया **:** "ऐ ह़ौज़ वाले ! हमें न बता।" (مُؤَطّا امام مالك ج۱ ص٤٨ رقم٤٧)

जानवरों के झूटे के मु-तअ़ल्लिक़ म-दनी फूल

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! नजासत की तह़क़ीक़ में पड़ने की ह़ाजत नहीं ह़ालां कि येह इम्कान होता है कि ह़ौज़ में दरिन्दे म-सलन कुत्ते भी पानी पी लें और जो ठहरा या'नी दह दर दह से कम पानी कुत्ता झूटा कर दे वोह **नापाक** हो जाता है। मगर जिस को मा'लूम ही नहीं कि दरिन्दे ने उस में से पानी पिया या नहीं उस के ह़क़ में वोह पानी पाक है। दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 1250 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "**बहारे शरीअ़त**" जिल्द अव्वल सफ़ह़ा 342 पर मस्अला नम्बर 10 है **:** "सूअर,

कुत्ता, शेर, चीता, भेड़िया, हाथी, गीदड़ और दूसरे दरिन्दों का **झूटा नापाक** है।" ज़िम्नन "**पन्जतन पाक**" के आठ हुरूफ़ की निस्बत से जानवरों के झूटे से **मु–तअ़ल्लिक़** मज़ीद 8 **म–दनी फूल** भी मुला–हज़ा कर लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ दुन्या व आख़िरत का नफ़्अ़ मिलेगा ﴾**1**﴿ जिन जानवरों का गोश्त खाया जाता है चौपाए हों या परिन्द उन का झूटा "**पाक**" है अगर्चे नर हों जैसे गाय, बैल, भैंस, बकरी, कबूतर, तीतर वग़ैरा ﴾**2**﴿ जो मुर्ग़ी छूटी फिरती और ग़लीज़ (या'नी गन्दगी) पर मुंह डालती हो उस का झूटा **मक्रूह** है और बन्द रहती हो तो **पाक** है ﴾**3**﴿ यूहीं बा'ज़ गाएं जिन की आ़दत ग़लीज़ (या'नी गन्दगी) खाने की होती है उन का झूटा **मक्रूह** है और अगर अभी नजासत खाई और इस के बा'द कोई ऐसी बात न पाई गई जिस से उस के मुंह की त़हारत हो जाए और इस ह़ालत में (अगर ठहरे या'नी दह दर दह से कम) पानी में मुंह डाल दिया तो **नापाक** हो गया। (और अगर जारी पानी में मुंह डाल कर पानी पिया तो मुंह पाक हो जाएगा) इसी त़रह़ अगर बैल, भैंसे, बकरे नरों ने ह़स्बे आ़दत मादा का पेशाब सूंघा और उस से उन का मुंह नापाक हुवा और निगाह से ग़ाइब न हुए न इतनी देर गुज़री जिस में त़हारत हो जाती तो उन का झूटा **नापाक** है और अगर चार (ठहरे) पानियों में मुंह डालें तो पहले तीन नापाक **चौथा पाक** ﴾**4**﴿ घोड़े का झूटा **पाक** है ﴾**5**﴿ घर में रहने वाले जानवर जैसे बिल्ली, चूहा, सांप, छिपकली का झूटा **मक्रूह** है ﴾**6**﴿ बिल्ली ने चूहा खाया और फ़ौरन बरतन में मुंह डाल दिया तो **नापाक** हो गया और अगर ज़बान से मुंह चाट लिया कि ख़ून का असर जाता रहा तो नापाक नहीं ﴾**7**﴿ अच्छा पानी होते हुए मक्रूह पानी से वुज़ू व ग़ुस्ल

मकरूह और अगर अच्छा पानी मौजूद नहीं तो कोई ह़रज नहीं । इसी त़रह़ मकरूह झूटे का खाना पीना भी मालदार को मकरूह है, ग़रीब मोह़ताज को बिला कराहत जाइज़ ﴾8﴿ जिस का झूटा नापाक है उस का पसीना और लुआ़ब भी **नापाक** है और जिस का झूटा **पाक** उस का पसीना और लुआ़ब भी पाक और जिस का झूटा **मकरूह** उस का लुआ़ब और पसीना भी मकरूह । (बहारे शरीअ़त, जिल्द अव्वल, स. 342 ता 344)

कीचड़ के ज़रीए वस्वसे का अ़जीब इ़लाज

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن **फ़तावा र-ज़विय्या** जिल्द अव्वल सफ़ह़ा 771 पर फ़रमाते हैं : **सालिह़ीन** رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِين (या'नी नेक बन्दों) में से एक साह़िब फ़रमाते हैं : मुझे दरबारए त़हारत (पाकी के बारे में) **वस्वसा** था । रास्ते की कीचड़ अगर कपड़े में लग जाती तो उसे धोता । (ह़ालां कि जब तक यक़ीनी मा'लूमात न हो कीचड़ पाक होती है) एक दिन नमाज़े सुब्ह़ के लिये जा रहा था, राह की कीचड़ लग गई, मैं ने धोना चाहा और ख़याल आया कि धोता हूं तो **जमाअ़त** जाती है, नागाह (या'नी अचानक) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मुझे हिदायत फ़रमाई (और) मेरे दिल में डाला कि इस कीचड़ में लोट और सब कपड़े सान (या'नी कीचड़ आलूद कर) ले और यूंही (या'नी इसी ह़ालत में) नमाज़ में शरीक हो जा । मैं ने ऐसा ही किया, फिर **वस्वसा** न हुवा । (الحديقة النّدية ج٢ص٦٩٣)

जब तक मा'लूम न हो कीचड़ पाक है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! येह इ़ल्मे दीन की

ब-र-कत है, उन बुज़ुर्ग को मस्अला मा'लूम है कि रास्ते की कीचड़ उस वक़्त तक **नजिस** क़रार नहीं दी जा सकती जब तक उस का नापाक होना क़त़ई (या'नी यक़ीनी) त़ौर पर मा'लूम न हो लिहाज़ा उन्हों ने **वस्वसे** का ख़ूब इ़लाज फ़रमा लिया ! **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** के मत़्बूआ़ रिसाले, **"कपड़े पाक करने का त़रीक़ा"** में है : रास्ते की कीचड़ (चाहे बारिश की हो या कोई और) **पाक** है जब तक उस का **नजिस** होना मा'लूम न हो, तो अगर पाउं या कपड़े में लगी और बे धोए नमाज़ पढ़ ली हो गई मगर धो लेना बेहतर है।

(बहारे शरीअ़त, जिल्द अव्वल, स. 394)

चादर का कौन सा कोना नापाक था येह याद न हो तो ?

कभी लिबास पर नजासत लग जाए और पता न चले कि कहां लगी थी तो भी आदमी **वस्वसों** का शिकार हो जाता है, ऐसी सूरत में भी शरीअ़ते मुत़ह्हरा ने हमें बहुत आसानी दी है। चुनान्चे **फ़तावा र-ज़विय्या शरीफ़** में है कि चादर का एक गोशा (या'नी कोना) यक़ीनन नापाक था और **ता'यीन** याद न रहे (या'नी येह याद न हो कि कौन सा कोना नापाक था) तो कोई सा कोना धोए, **पाकी का** हुक्म देंगे।

(फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 4, स. 511)

बच्चा पानी में हाथ डाल दे तो ?

बा'ज़ अवक़ात बच्चा पानी में हाथ डाल देता है, तो आदमी शक में पड़ जाता है कि पानी पाक रहा या नापाक हो गया ! इस मुआ़-मले में भी शक में पड़ने की ज़रूरत नहीं क्यूं कि फ़ु-क़हाए किराम (رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام)

हुक्म देते हैं : "जिस पानी में बच्चा हाथ या पाउं डाल दे, पाक है जब तक नजासत की तह़क़ीक़ न हो।" (फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 4, स. 486)

त़हारत के बारे में शैत़ान अक्सर
दिलाता है शक, हो करम या इलाही

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

त़लाक़ के बारे में वस्वसे

बा'ज़ अवक़ात इन्सान को शैत़ान **वस्वसा** डालता है कि याद कर तेरे मुंह से अपनी बीवी के लिये **त़लाक़** के अल्फ़ाज़ निकल गए थे ! ऐसी सूरत में जब कि दिल मुत़्मइन है कि त़लाक़ नहीं दी, सिर्फ़ **वस्वसा** है तो शैत़ान को कह दीजिये तू झूटा है मैं ने त़लाक़ नहीं दी। इस ज़िम्न में मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن एक **ह़िकायत** नक़्ल करते हुए फ़रमाते हैं : इमाम अबू ह़ाज़िम **अजिल्ला अइम्मए** ताबिईन से हैं उन के पास एक शख़्स आ कर शाकी हुवा (या'नी शिकायत की) कि शैत़ान मुझे **वस्वसे** में डालता है और सब से ज़ियादा सख़्त मुझ पर येह गुज़रता है कि आ कर कहता है तूने अपनी औ़रत को **त़लाक़** दे दी। इमाम ने फ़ौरन फ़रमाया : क्या तूने मेरे पास आ कर मेरे सामने अपनी औ़रत को त़लाक़ न दी ? वोह घबरा कर बोला : ख़ुदा की क़सम ! मैं ने कभी आप के पास उसे त़लाक़ न दी। फ़रमाया : जिस त़रह़ मेरे आगे क़सम खाई, शैत़ान से क्यूं नहीं क़सम खा कर कहता कि वोह तेरा पीछा छोड़े। (या'नी जब इतना ए'तिमाद है कि मेरे सामने क़सम खा सकता है तो

इसी ए'तिमाद के साथ शैत़ान को भी क़सम खा कर कह दे कि ओ मरदूद ! दफ़्अ़ हो, ख़ुदा की क़सम ! मैं ने अपनी औ़रत को **त़लाक़** नहीं दी ।)

(फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 1, स. 785)

परेशानियां वस्वसों की ख़ुदाया

तू कर दूर बहरे रज़ा या इलाही

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

कोई खिलाए तो तह़क़ीक़ मत कीजिये

बा'ज़ अवक़ात खाने की दा'वत के मौक़अ़ पर भी इन्सान **वस्वसे** में पड़ जाता है कि न जाने इस का खाना ह़लाल माल का है या ह़राम का ? इस बारे में ह़दीसे पाक में मह़बूबे रब्बुल इ़बाद صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का इर्शादे गिरामी है : जब तुम में से कोई अपने मुसल्मान भाई के यहां जाए और वोह उसे अपने खाने में से खिलाए तो खा ले और उस के बारे में सुवाल न करे और अगर वोह अपने मशरूब (पीने की चीज़) से पिलाए तो पी ले और उस के बारे में कुछ न पूछे ।

(شُعَبُ الْاِیمان ج٥ ص٦٧ حدیث٥٨٠١)

खाने के बारे में तह़क़ीक़ से गुनाहों का दरवाज़ा खुल सकता है

سُبْحٰنَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ कितनी आसानी है । काश ! हमें दीनी मा'लूमात होतीं कि इ़ल्मे दीन भी ''वस्वसों'' की जड़ काटने का ज़रीआ़ है । अफ़्सोस ! हम दीन से ना वाक़िफ़िय्यत की बिना पर भी अक्सर शैत़ान के **वस्वसों** का शिकार हो जाते हैं । **मेरे आक़ा** आ'ला ह़ज़रत इमामे

अहले सुन्नत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़तावा र-ज़विय्या जिल्द 4 सफ़ह़ा 528 ता 529 पर फ़रमाते हैं : **हुज्जतुल इस्लाम, ह़कीमुल उम्मह, काशिफ़ुल ग़ुम्मह** इमाम अबू ह़ामिद मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने एह़याउल उ़लूम शरीफ़ में फ़रमाया : मैं कहता हूं (जिस को दा'वत दी गई) उस के लिये जाइज़ नहीं कि वोह उस (दाई़) से सुवाल करे बल्कि वोह तक़्वा इख़्तियार करना चाहता है तो नरमी के साथ छोड़ दे और अगर (दा'वत में) जाना ज़रूरी है तो पूछे बिग़ैर खाए क्यूं कि सुवाल करने में ईज़ा रसानी, पर्दा दरी और वह़्शत पैदा करना है और येह बिला शुबा **ह़राम** है । (इमाम ग़ज़ाली رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ आगे चल कर मज़ीद फ़रमाते हैं :) और कितने ही जाहिल ज़ाहिद हैं जो तफ़्तीश के ज़रीए़ दिलों में वह़्शत पैदा करते हैं और निहायत सख़्त और ईज़ा रसां कलाम इस्ति'माल करते हैं दर ह़क़ीक़त शैत़ान उन की नज़रों में इसे अच्छा क़रार देता है ताकि वोह ह़लाल ख़ोर मश्हूर हों, और अगर इस का बाइ़स मह़ूज़ दीन हो तो अपने पेट में शुबा वाली चीज़ दाख़िल करने के डर से ज़ियादा ख़ौफ़ मुसल्मान के दिल को ईज़ा देने का होता क्यूं कि जिस बात को वोह नहीं जानता उस पर मुवा-ख़ज़ा (या'नी पूछगछ का मुआ़-मला) नहीं होगा । जब कि वहां ऐसी अ़लामत न हो जिस की वजह से इज्तिनाब (या'नी बचना) लाज़िम होता है । तो जान लो ! परहेज़ गारी तर्के सुवाल में है **तजस्सुस** में नहीं और अगर खाना ज़रूरी हो तो खा ले और अच्छा गुमान करने में परहेज़ गारी है । (اِحیاءُ العُلوم ج۲ ص۱۵۰)

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढा उस ने जफ़ा की । (عبدالرزاق)

दिल पे शैत़ान ने आक़ा है जमाया क़ब्ज़ा   हूं गुनाहों में गरिफ़्तार रसूले अ़-रबी

आह ! बढ़ता ही चला जाता है मरज़े इ़स्यां   दो शिफ़ा सय्यिदे अबरार रसूले अ़-रबी

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

शैत़ान की दो क़िस्में

येह तो था "**शयात़ीनुल जिन्न**" के वस्वसों का बयान । इसी त़रह़ "**शयात़ीनुल इन्स**" या'नी "शैत़ान आदमी" भी गुमराह करने की कोशिश करते और दिलों में शुकूक व शुबुहात डालते हैं । जैसा कि मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن के फ़रमान का खुलासा है : **शयात़ीन की दो क़िस्में** हैं : (1) **शयात़ीनुल जिन्न** या'नी इब्लीसे लई़न और इस की औलाद (2) **शयात़ीनुल इन्स** या'नी कुफ़्फ़ार व **मुब्तदिई़न** (या'नी बद मज़हबों) के दाई़ व मुनादी (या'नी कुफ़्र व गुमराही की दा'वत देने वाले और इस त़रफ़ बुलाने वाले) । मज़ीद फ़रमाते हैं : आइम्मए दीन फ़रमाया करते कि "**शैत़ान आदमी, शैत़ान जिन्न से सख़्त तर होता है ।**"

(फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 1, स. 780, 781)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने **सू-रतुन्नास** में इन दोनों क़िस्म के शयात़ीन से पनाह मांगने का हुक्म दिया है । चुनान्चे इर्शादे बारी तआ़ला है :

الَّذِیْ یُوَسْوِسُ فِیْ صُدُوْرِ النَّاسِ ۙ﴿۵﴾ مِنَ الْجِنَّةِ وَ النَّاسِ ٪﴿۶﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : वोह जो लोगों के दिलों में वस्वसे डालते हैं जिन्न और आदमी ।

शैत़ान आदमी

ह़दीसे पाक में भी है कि हमारे प्यारे आक़ा मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से इर्शाद फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की पनाह मांग शैत़ान आदमियों और शैत़ान जिन्नों के शर से। अ़र्ज़ की : क्या आदमियों में भी शैत़ान हैं ? फ़रमाया : हां। (مُسنَدِ اِمام احمد ج۸ص۱۳۰حدیث۲۱۶۰۲) **चुनान्चे** जितने काफ़िर, मुशरिक, गुमराह, बद मज़हब और गुस्ताख़ाने रसूल हैं वोह सब के सब **शयात़ीनुल इन्स** (या'नी शैत़ान आदमियों) में दाख़िल हैं और इब्लीस के साथ साथ उन के शर से भी हमें पनाह मांगते रहना चाहिये, मगर अफ़्सोस ! बहुत से मुसल्मान इन से ख़ूब मेलजोल रखते हैं और उन की गुफ़्त-गू भी ख़ूब तवज्जोह से सुनते हैं। उन के मज़हबी प्रोग्रामों में भी शरीक होते हैं, उन का लिट्रेचर भी पढ़ते हैं, येही वजह है कि फिर अपने दीन से ना वाक़िफ़िय्यत की बिना पर शक व शुब्हे में पड़ जाते हैं कि आया वोह सह़ीह़ हैं या हम ? और फिर बा'ज़ तो उन के जाल में इस क़दर फंस जाते हैं कि उन्हीं के गुन गाने लगते हैं और यहां तक कहते सुनाई देते हैं कि "येह भी तो सह़ीह़ कह रहे हैं !" मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह इमाम **अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَیْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़तावा र-ज़विय्या जिल्द अव्वल सफ़ह़ा 781 ता 782 पर ऐसों से बचने की ताकीद करते हुए फ़रमाते हैं : भाइयो ! तुम अपने नफ़अ़ नुक़्सान को ज़ियादा जानते हो या तुम्हारा रब عَزَّوَجَلَّ तुम्हारे नबी صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم, उन का हुक्म तो येह है कि शैत़ान तुम्हारे पास

वस्वसा डालने आए तो सीधा जवाब येह दे दो कि "तू झूटा है" न येह कि तुम आप दौड़ दौड़ के इन (काफ़िरों या बे दीनों और बद मज़्हबों) के पास जाओ और अपने रब جَلَّ وَعَلَا अपने कुरआन अपने नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की शान में कलिमाते मल्ऊ़ना सुनो । (आ'ला ह़ज़रत आगे चल कर मजी़द फ़रमाते हैं :) (पारह 8 सू-रतुल अन्आ़म की आयत नम्बर 112 में इर्शाद फ़रमाता है) وَلَوْ شَآءَ رَبُّكَ مَا فَعَلُوْهُ فَذَرْهُمْ وَمَا يَفْتَرُوْنَ ﴿۱۱۲﴾ **तरजमा :** "और तेरा रब चाहता तो वोह येह धोके बनावट की बातें न बनाते फिरते तो उन्हें और उन के बोहतानों को यक लख़्त छोड़ दे ।" देखो उन्हें और उन की बातों को छोड़ने का हुक्म फ़रमाया, या उन के पास सुनने के लिये दौड़ने का । और सुनिये इस के बा'द की (**सू-रतुल अन्आ़म** की) आयत (113) में फ़रमाता है : وَلِتَصْغٰۤى اِلَيْهِ اَفْـِٕدَةُ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ وَلِيَرْضَوْهُ وَلِيَقْتَرِفُوْا مَا هُمْ مُّقْتَرِفُوْنَ ﴿۱۱۳﴾ (**तरजमा :** और इस लिये कि उन के दिल उस की त़रफ़ कान लगाएं जिन्हें आख़िरत पर ईमान नहीं और उसे पसन्द करें और जो कुछ नापाकियां वोह कर रहे हैं येह भी करने लगें) देखो उन की बातों की त़रफ़ कान लगाना उन का काम बताया जो आख़िरत पर ईमान नहीं रखते और इस का नतीजा येह फ़रमाया कि वोह मल्ऊ़न बातें उन पर असर कर जाएं और येह भी उन जैसे हो जाएं وَالْعِيَاذُ بِاللهِ تَعَالٰى (या'नी और **अल्लाह** तआ़ला की इस से पनाह) । लोग अपनी जहालत से गुमान करते हैं कि हम अपने दिल से मुसल्मान हैं हम पर उन का क्या असर होगा ! ह़ालां कि **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : जो **दज्जाल** की ख़बर सुने उस पर वाजिब है कि उस से दूर भागे कि ख़ुदा की क़सम ! आदमी उस के पास जाएगा और येह ख़याल करेगा कि मैं तो मुसल्मान हूं या'नी मुझे उस से क्या

नुक़्सान पहुंचेगा वहां उस के धोकों में पड़ कर उस का पैरू (या'नी पैरवी करने वाला) हो जाएगा । (ابوداؤد ج٤ ص١٥٧ حدیث٤٣١٩) क्या दज्जाल एक उसी दज्जाल अख़्बस (या'नी नापाक तरीन दज्जाल) को समझते हो जो आने वाला है, ह़ाशा ! तमाम गुमराहों के दाई मुनादी (या'नी दा'वत देने वाले बुलाने वाले) सब **दज्जाल** हैं और सब से दूर भागने ही का हुक्म फ़रमाया और उस में येही अन्देशा बताया है । **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : आखि़र ज़माने में दज्जाल कज़्ज़ाब (या'नी झूटे दज्जाल) लोग होंगे कि वोह बातें तुम्हारे पास लाएंगे जो न तुम ने सुनीं न तुम्हारे बाप दादा ने, तो उन से दूर रहो और उन्हें अपने से दूर रखो कहीं वोह तुम्हें गुमराह न कर दें, कहीं वोह तुम्हें फ़ितने में न डाल दें । [مُسلِم ص٩ حدیث٧] (फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 1, स. 781, 782)

सरवरे दीं ! लीजे अपने ना तुवानों की ख़बर
नफ़्सो शैत़ां सय्यिदा ! कब तक दबाते जाएंगे

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

वस्वसों का इ़लाज

शैत़ान मेंडक की शक्ल में

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मन्कूल है, किसी ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से दुआ़ की : "**या अल्लाह** ! मुझे बनी आदम (या'नी आदमी) के दिल में शैत़ान के वसाविस डालने का त़रीक़ा दिखा दे ।" उस ने ख़्वाब में देखा कि एक शीशे की त़रह़ का

आदमी है, जिस के अन्दर बाहर सब आरपार नज़र आ रहा है, उस के कांधे और कान के दरमियान शैत़ान **मेंडक** की शक्ल में बैठ कर अपनी त़वील बारीक **सूंड** को कांधे से उस के दिल तक दाख़िल किये **वस्वसे** डाल रहा है, जब जब वोह आदमी **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ का ज़िक्र करता है, शैत़ान पीछे हट जाता है। (مُکاشَفَۃُ القُلوب ص٥٩)

सरकार صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का कोई लम्ह़ा ज़िक्रुल्लाह से ख़ाली न होता

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुवा कि **ज़िक्रुल्लाह** वस्वसों का बेहतरीन इ़लाज है क्यूं कि शैत़ान ज़िक्रे इलाही عَزَّ وَجَلَّ से दूर भागता है, हमारे मीठे मीठे आक़ा, मक्की म-दनी **मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का कोई लम्ह़ा कोई सांस **ज़िक्रुल्लाह** से ख़ाली न जाता था, हमें जब जब मौक़अ़ मिले बिला ज़रूरत मुंह बन्द किये रहने के बजाए "**अल्लाह अल्लाह**" करते या **दुरूद शरीफ़** पढ़ते रहना चाहिये। اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّ وَجَلَّ इस त़रह़ सवाब का "मीटर" चलता रहेगा। और शैत़ान भी कमज़ोर से कमज़ोर तर होता चला जाएगा। (اِحیاءُ العُلوم ج ٣ ص٣٧)

शैत़ान का पिघल कर चिड़िया की त़रह़ हो जाना

हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی नक़्ल करते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना **क़ैस बिन ह़ज्जाज** رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मेरे शैत़ान (हमज़ाद) ने मुझ से कहा : मैं जब तुम्हारे अन्दर दाख़िल हुवा तो ऊंट की त़रह़ (त़ाक़त वर) था और अब चिड़िया की त़रह़ (कमज़ोर) हूं। मैं ने पूछा : क्यूं ? कहने लगा : तुम **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के ज़िक्र के ज़रीए़ मुझे पिघलाते रहते

हो। (اِحیاءُ العُلوم ج ٣ ص ٣٧) बहर ह़ाल यादे इलाही से **ग़फ़्लत** अच्छी चीज़ नहीं।

शैत़ान पीछे हट जाता है

ह़ज़रते सय्यिदुना **इब्ने अ़ब्बास** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا फ़रमाते हैं : शैत़ान इन्सान के दिल पर बैठा रहता है, जब बन्दा **ज़िक्रुल्लाह** से ग़ाफ़िल हो जाता है तो शैत़ान वस्वसे डालता है और जब इन्सान **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करता है तो शैत़ान पीछे हट जाता है।

(مُصَنَّف ابن اَبی شَیْبہ ج٩ ص٣٩٢)

ज़िक्र और वस्वसों के दरमियान जंग

हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना मुजाहिद عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَاحِد ने इस इर्शादे ख़ुदा वन्दी :

مِنۡ شَرِّ الۡوَسۡوَاسِ ۙ۬ الۡخَنَّاسِ ۪ۙ﴿۴﴾

(پ ٣٠، النّاس ٤)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : उस के शर से जो दिल में बुरे ख़त़रे डाले और दुबुक रहे।

की तफ़्सीर में फ़रमाया कि वोह (शैत़ान) दिल पर छाया हुवा है जब इन्सान **अल्लाह** तआ़ला का ज़िक्र करता है तो वोह सुकड़ जाता है, जब ग़ाफ़िल होता है तो वोह उस के दिल पर फैल जाता है। तो **अल्लाह** तआ़ला के **ज़िक्र** और शैत़ान के **वस्वसे** के दरमियान जंग इसी त़रह़ जारी है जिस त़रह़ रोशनी और अंधेरे नीज़ रात और दिन के दरमियान लड़ाई जारी है येह दोनों या'नी ज़िक्र व वस्वसा एक दूसरे के मुख़ालिफ़ हैं। **अल्लाह** तआ़ला (पारह 28 **सूरए मुजादिलह** आयत 19 में) इर्शाद फ़रमाता है :

اِسۡتَحۡوَذَ عَلَیۡہِمُ الشَّیۡطٰنُ فَاَنۡسٰہُمۡ ذِکۡرَ اللّٰہِ ؕ

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : उन पर शैत़ान ग़ालिब आ गया तो उन्हें **अल्लाह** की याद भुला दी ।

(اِحیاءُ العُلوم ج۳ ص۳۵)

शैत़ान दिल को कब लुक़्मा बनाता है

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡہُ फ़रमाते हैं, नबिय्ये अकरम, **नूरे मुजस्सम**, शाहे बनी आदम, **रसूले मुह़्तशम** صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : शैत़ान इन्सान के दिल पर अपनी सूंड रख देता है, अगर वोह **अल्लाह** तआ़ला का ज़िक्र करे तो वोह सुकड़ जाता है और अगर **अल्लाह** तआ़ला को भूल जाए तो उस के दिल को लुक़्मा बना लेता है । (ابویعلیٰ ج۳ ص۴۵۳ حدیث ۴۲۸۵)

40 साल का आदमी अगर तौबा न करे तो......

मन्क़ूल है : जब आदमी चालीस बरस का हो जाता है और तौबा नहीं करता तो शैत़ान उस के चेहरे पर अपना हाथ फैरता है और कहता है : इस चेहरे पर कु़रबान जाऊं जो फ़लाह़ नहीं पाएगा । (اِحیاءُ العُلوم ج ۳ ص۳۵)

शहज़ादए आ'ला ह़ज़रत, ताजदारे अहले सुन्नत, हु़ज़ूर मुफ़्तिये आ'ज़म बारगाहे इलाही में अ़र्ज़ करते हैं :

जो है ग़ाफ़िल तेरे ज़िक्र से ज़ुल जलाल उस की ग़फ़्लत है उस पर वबालो नकाल[1]
क़ा'रे ग़फ़्लत[2] से हम को ख़ुदाया निकाल हम हों ज़ाकिर[3] तेरे और मज़्कूर[4] तू

अल्लाहू अल्लाहू अल्लाहू अल्लाहू (सामाने बख़्शिश)

صَلُّوا عَلَی الۡحَبِیۡب ! صَلَّی اللّٰہُ تعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

1 : और अ़ज़ाब 2 : ग़फ़्लत का गढ़ा 3 : ज़िक्र करने वाला 4 : ज़िक्र किया गया

वस्वसों पर तवज्जोह मत दीजिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! "वस्वसों" का एक इ़लाज येह भी है कि उस की त़रफ़ से तवज्जोह हटा दी जाए । काश ! कि ऐसा हो जाया करे कि जूं ही **वस्वसा** आए हम तसव्वुर ही तसव्वुर में **मक्कए मुकर्रमा** زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعۡظِیۡمًا की ह़सीन वादियों में गुम हो जाएं, मस्जिदुल ह़राम शरीफ़ में ह़ाज़िर हो कर ख़ूब ख़ूब **ह़-जरे अस्वद** को चूमने और झूम झूम कर का'बए मुशर्रफ़ा के गिर्द घूमने में मश्ग़ूल हो जाएं । काश ! काश ! काश ! मीठे मदीने की ह़सीन यादों में खो जाएं, सोहने मोहने मदीने के ह़सीन व दिलकश नज़्ज़ारों में गुम हो जाएं, कभी मदीने के दिलरुबा कांटों के तो कभी वहां के ख़ुशनुमा फूलों के तसव्वुर में डूब जाएं । कभी मदीने की ख़ूब सूरत वादियों के तो कभी मदीने की नूरानी गलियों के ह़ुस्न में मस्त हो जाएं । कभी मदीने के दिलकुशा पहाड़ों की, तो कभी सह़राए मदीना की बहारों की यादों में ख़ुद को गुमाएं, कभी मदीने की पाकीज़ा फ़ज़ाओं का तो कभी महकी महकी हवाओं का तसव्वुर ही तसव्वुर में लुत़्फ़ उठाएं । कभी सब्ज़ सब्ज़ गुम्बद के ह़सीन नज़्ज़ारों का तो कभी सुनह्री जालियों पर बा अदब ह़ाज़िरी का तसव्वुर जमाएं और अगर शौक़ साथ दे तो शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे ह़ुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साह़िबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا के लाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का ह़सीन तसव्वुर कर लिया

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूद शरीफ़ पढ़ो **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ तुम पर रह़मत भेजेगा । (ابن عدی)

करें । ऐ काश ! हमें मदीने और मदीने वाले आक़ा صَلَّى اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का ऐसा ग़म, सोज़, इ़श्क़ और दर्द मिल जाए कि दुन्या के ग़मों और सदमों नीज़ शैत़ानी वस्वसों से आज़ाद हो जाएं । ऐ काश !

ऐसा गुमा दे उन की विला में ख़ुदा हमें
ढूंडा करें पर अपनी ख़बर को ख़बर न हो

(ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

“या ख़ुदा करम !” के आठ ह़ुरूफ़ की निस्बत से वस्वसों के 8 इ़लाज

(1) **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की त़रफ़ रुजूअ़ कीजिये । (या'नी **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की शैत़ान से नजात के लिये इमदाद त़लब कीजिये और **ज़िक्रुल्लाह** शुरूअ़ कर दीजिये)

(2) اَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْم पढ़िये ।

(3) لَاحَوْلَ وَلَا قُوَّۃَ اِلَّا بِاللّٰہِ पढ़िये ।

(4) सू-रतुन्नास की तिलावत कीजिये ।

(5) اٰمَنْتُ بِاللّٰہِ وَرَسُوْلِہٖ कहिये ।

(6) هُوَ الْاَوَّلُ وَالْاٰخِرُ وَالظَّاهِرُ وَالْبَاطِنُ ۚ وَهُوَ بِكُلِّ شَیْءٍ عَلِیْمٌ ۝۳ (پ۲۷ الحدید۳) कहिये, इन से फ़ौरन **वस्वसा** दफ़्अ़ हो जाता है ।

(7) سُبْحٰنَ الْمَلِكِ الْخَلَّاقِ ، اِنْ یَّشَاْ یُذْهِبْكُمْ وَیَاْتِ بِخَلْقٍ جَدِیْدٍ ۝۱۹

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़्फ़िरत है। (جامع صغیر)

وَّمَا ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ بِعَزِيْزٍ ﴿۲۰﴾ की कसरत इसे या'नी वस्वसे को जड़ से क़त्अ़ कर (या'नी काट) देती है। (मुलख़्ख़स अज़ फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 1, स. 770) (इस दुआ़ के हि़स्सए आयत को आप की मा'लूमात के लिये **मुनक़्क़श** हिलालैन और रस्मुल ख़त़ की तब्दीली के ज़रीए वाज़ेह़ किया है)

(8) **मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत** मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : **"सूफ़ियाए किराम** رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام फ़रमाते हैं कि जो कोई सुब्ह़ शाम इक्कीस इक्कीस बार **"लाह़ौल शरीफ़"** पानी पर दम कर के पी लिया करे तो اِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ **वस्वसए शैत़ानी** से बहुत ह़द तक अम्न में रहेगा।" (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 1, स. 87)

मुह़ीत़ दिल पे हुवा हाए नफ़्से अम्मारा   दिमाग़ पर मेरे इब्लीस छा गया या रब

रिहाई मुझ को मिले काश ! नफ़्सो शैत़ां से

तेरे ह़बीब का देता हूं वासित़ा या रब

(वसाइले बख़्शिश, स. 54)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

अगर वस्वसे किसी सूरत न जाएं तो......

अगर वज़ाइफ़ो आ'माल से शैत़ान के **वस्वसों** से छुटकारा न हो तो घबराने की ज़रूरत नहीं। दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ **मिन्हाजुल आ़बिदीन** में **हुज्जतुल इस्लाम** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू ह़ामिद मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى ने जो कुछ फ़रमाया इस का ख़ुलासा है : अगर आप येह मह़सूस करें कि शैत़ान, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से पनाह मांगने

के बा वुजूद पीछा नहीं छोड़ रहा और ग़ालिब आने की कोशिश में है तो इस का मत़लब येह है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को आप के मुजा–हदे, **कु़व्वत** और सब्र का इम्तिह़ान मत़लूब है, या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आज़मा रहा है कि आप शैत़ान से मुक़ाबला और मुह़ा–रबा (या'नी जंग) करते हैं या इस से मग़्लूब हो (या'नी हार) जाते हैं। देखिये ना ! उस ने हम पर कुफ़्फ़ार वग़ैरा को भी तो मुसल्लत़ कर ही रखा है ह़ालां कि वोह इस पर यक़ीनन क़ादिर है कि हमारे जिहाद वग़ैरा के बिग़ैर ही उन की शरारतों और फ़ितनों को कुचल दे, लेकिन वोह ऐसा नहीं करता बल्कि बन्दों को उन से जिहाद का हुक्म फ़रमाता है, ताकि आज़माए कि किस के दिल में जज़्बए जिहाद और शहादत की तड़प है और कौन पूरे ख़ुलूस और **सब्र** से इन का मुक़ाबला करता है। आगे चल कर सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِى **मजीद** फ़रमाते हैं : तो इसी त़रह़ शैत़ान के मुक़ाबले में भी हमें चुस्ती और पूरी कोशिश का हुक्म दिया गया है। फिर हमारे उ़–लमाए किराम (رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام) ने फ़रमाया है कि शैत़ान से मुक़ाबला करने और इस पर क़ाबू पाने के लिये तीन3 चीज़ें ज़रूरी हैं 《1》 तुम उस के ह़ीले और चालाकियां मा'लूम करो और पहचानो, जब इस का इ़ल्म हो जाएगा तो फिर वोह तुम को नुक़्सान नहीं पहुंचा सकेगा, जैसा कि **चोर** को जब पता चल जाए कि साह़िबे मकान को मेरा इ़ल्म हो गया है तो वोह भाग खड़ा होता है 《2》 तुम शैत़ान की गुमराह कुन और गुनाहों भरी दा'वत हरगिज़ मन्ज़ूर न करो, तुम्हारा दिल क़त़्अ़न उस की दा'वत का असर न ले नीज़ तुम उस के मुक़ाबले

की त़रफ़ तवज्जोह भी न दो, क्यूं कि इब्लीस एक **भौंकने वाले कुत्ते** की मानिन्द है, अगर तुम उस को छेड़ोगे तो ज़ियादा शोर मचाएगा और अगर ए'राज़ करोगे (या'नी इस के वस्वसों की त़रफ़ तवज्जोह न दोगे) तो वोह भी ख़ामोश हो जाएगा ﴾3﴿ ज़िक्रे इलाही की कसरत करो ।

(مِنہاجُ العابِدین(عربی) ص٤٦)

ज़िक्र से शैत़ान की तक्लीफ़ की कैफ़िय्यत

मन्क़ूल है : शैत़ान के लिये **ज़िक्रुल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इतना तक्लीफ़ देह है जैसे कि इन्सान के पहलू में आकिलह । (مِنہاجُ العابِدین ص٤٦) म-रज़े आकिलह एक ऐसी बीमारी है जो इन्सान के गोश्त पोस्त को **मु-तअस्सिर** करती है और जिस्म से गोश्त ख़ुद बख़ुद जुदा होना शुरूअ़ हो जाता है ।

इम्तिहां के कहां क़ाबिल हूं मैं प्यारे अल्लाह

बे सबब बख़्श दे मौला तेरा क्या जाता है (वसाइले बख़्शिश, स. 72)

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

वस्वसा : बारहा **ज़िक्रुल्लाह** करने के बा वुजूद शैत़ान के **वस्वसे** नहीं जाते । म-सलन नमाज़ सब से बड़ा ज़िक्र है लेकिन नमाज़ में तो बहुत ज़ियादा वस्वसे आते हैं, यहां तक कि भूली बातें भी शैत़ान याद दिला देता है !

वस्वसे का इ़लाज : बेशक ज़िक्र से शैत़ान भागता है और यक़ीनन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ दुआ़ क़बूल फ़रमाता है जैसा कि क़ुरआने पाक **सूरए मुअमिन** आयत नम्बर 60 में इर्शाद होता है : اُدْعُوْنِیْۤ اَسْتَجِبْ لَكُمْ ط **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** ''मुझ से दुआ़ करो मैं क़बूल करूंगा ।'' इस

के बा वुजूद बारहा दुआ़ की क़बूलिय्यत के आसार ज़ाहिर नहीं होते, तो मा'लूम हुवा कि ज़िक्र के ज़रीए़ शैत़ान को भगाने और दुआ़एं क़बूल होने में कुछ शराइत़ भी हैं, जैसा कि दवाओं का मुआ़-मला है कि परहेज़ी न करे तो दवा काम नहीं दिखाती म-सलन किसी को "शूगर" का मरज़ हो जाए, फिर भी मिठाइयां खाए चला जाए तो दवा क्या करेगी ! लिहाज़ा ज़िक्र से वस्वसों से नजात पाने और शैत़ान को भगाने के लिये गुनाहों से परहेज़ी ज़रूरी है अगर तक़्वा न अपनाया जाए तो ज़िक्र नुमा दवा का वस्वसों के मरज़ पर कार आमद होना दुश्वार है ! **हुज्जतुल इस्लाम** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِى फ़रमाते हैं : शैत़ान भूके कुत्ते की मिस्ल है जो तुम्हारे क़रीब आता है अगर तुम्हारे और इस के दरमियान रोटी या गोश्त न हो तो धुत्कारने से ही चला जाता है या'नी महूज़ आवाज़ ही से उसे भगाया जा सकता है और अगर तुम्हारे सामने गोश्त हो और वोह भूका भी हो तो वोह गोश्त पर झपटता है और महूज़ ज़बानी धुत्कार से दूर नहीं होता। तो जो दिल शैत़ान की ग़िज़ा से ख़ाली हो उस दिल से ज़िक्र के ज़रीए़ शैत़ान दूर हो जाता है, जब दिल पर शह्वत ग़ालिब हो तो दिल का अन्दरूनी ह़िस्सा शैत़ान के क़ाबू में होगा और वोह उस वक़्त किये जाने वाले **ज़िक्रुल्लाह** को दिल के इर्द गिर्द फैला देगा। लेकिन जहां तक मुत्तक़ी लोगों के दिल का तअ़ल्लुक़ है जो नफ़्सानी ख़्वाहिशात और बुरी सिफ़ात से ख़ाली होते हैं उन पर शैत़ान, शह्वतों की वजह से नहीं आता बल्कि ग़फ़्लत की वजह से ज़िक्र से ख़ाली होने के बाइ़स आ जाता है जब वोह ज़िक्र की त़रफ़ लौटते हैं तो वोह दूर हो जाता है। (مُلَخَّص از اِحیاءُ الْعُلوم ج ۳ ص ٤٥) बहर

ह़ाल जो रात दिन गुनाहों में पड़ा रहे ऐसा शख़्स तो गोया शैत़ान का दोस्त है और शैत़ान अपने दोस्तों के पास से इतनी आसानी से भागे ऐसा कहां है ! पारह 17 **सूरए ह़ज** आयत नम्बर 4 में इर्शाद होता है :

كُتِبَ عَلَيْهِ اَنَّهٗ مَنْ تَوَلَّاهُ فَاَنَّهٗ يُضِلُّهٗ وَيَهْدِيْهِ اِلٰى عَذَابِ السَّعِيْرِ ﴿۴﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : जिस पर लिख दिया गया है कि जो उस की दोस्ती करेगा तो येह ज़रूर उसे गुमराह कर देगा और उसे अ़ज़ाबे दोज़ख़ की राह बताएगा।

हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِى फ़रमाते हैं : ह़क़ीक़ते ज़िक्र दिल में उसी वक़्त जा गुज़ीं होती है जब दिल को तक़्वे के ज़रीए़ आबाद किया जाए नीज़ इस को बुरी सिफ़ात से पाक कर दिया जाए वरना ज़िक्र मह़ज़ आने जाने वाली बात होगी दिल पर उस (या'नी ज़िक्र) की सल्त़नत और क़ब्ज़ा नहीं हो सकता लिहाज़ा वोह शैत़ान की हुकूमत को दूर नहीं कर सकता। मज़ीद फ़रमाते हैं : अगर तुम शैत़ान से बचना चाहते हो तो पहले तक़्वे के ज़रीए़ परहेज़ गारी इख़्तियार करो फिर ज़िक्र की दवा इस्ति'माल करो यूं शैत़ान तुम से भाग जाएगा। (اِحیاءُ الْعُلوم ج ۳ ص ۴۵،۴۷)

नफ़्सो शैत़ान हो गए ग़ालिब — इन के चुंगल से तू छुड़ा या रब

कर के तौबा मैं फिर गुनाहों में — हो ही जाता हूं मुब्तला या रब

नीम जां कर दिया गुनाहों ने

मरज़े इ़स्यां से दे शिफ़ा या रब

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلّی اللہ تعالٰی علٰی محمّد

त़ालिबे ग़मे मदीना व
बक़ीअ़ व मग़्फ़िरत व
बे ह़िसाब जन्नतुल फ़िरदौस
में आक़ा का पड़ोस



16 मुह़र्रमुल ह़राम 1432 हि.

म-दनी फूल

ऐ काश ! रोज़ी में कसरत की मह़ब्बत से ज़ियादा हम नेकियों में ब-र-कत की ह़सरत करते और इस के लिये भी कोई विर्द करते।

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जो शख़्स मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया । (طبرانی)

ماخذ و مراجع

کتاب	مطبوعہ	کتاب	مطبوعہ
تفسیر بغوی	دار الکتب العلمیۃ بیروت	کشف الخفاء	دار الکتب العلمیۃ بیروت
روح البیان	کوئٹہ	مشکاۃ المصابیح	دار الکتب العلمیۃ بیروت
صحیح بخاری	دار الکتب العلمیۃ بیروت	مرقاۃ المفاتیح	دار الفکر بیروت
صحیح مسلم	دار ابن حزم بیروت	اشعۃ اللمعات	کوئٹہ
سنن ابو داود	دار احیاء التراث العربی بیروت	مراٰۃ المناجیح	ضیاء القرآن پبلی کیشنز مرکز الاولیاء لاہور
سنن ابن ماجہ	دار المعرفۃ بیروت	طریقہ محمدیہ مع حدیقہ ندیہ	پشاور
المعجم الکبیر	دار احیاء التراث العربی بیروت	احیاء العلوم	دار صادر بیروت
مصنف ابن ابی شیبہ	دار الفکر بیروت	منہاج العابدین	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
مسند امام احمد	دار الفکر بیروت	فضل الصلاۃ علی النبی	المکتب الاسلامی بیروت
مؤطا امام مالک	دار المعرفۃ بیروت	فتاوٰی رضویہ	رضا فاؤنڈیشن مرکز الاولیاء لاہور
مجمع الزوائد	دار الفکر بیروت	بہارِ شریعت	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان	دار الکتب العلمیۃ بیروت	ملفوظات اعلیٰ حضرت	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی

येह रिसाला पढ़ कर दूसरे को दे दीजिये

शादी ग़मी की तक़रीबात, इज्तिमाअ़ात, ए'रास और जुलूसे मीलाद वग़ैरा में मक-त-बतुल मदीना के शाएअ़ कर्दा रसाइल और म-दनी फूलों पर मुश्तमिल पेम्फ़लेट तक़्सीम कर के सवाब कमाइये, गाहकों को ब निय्यते सवाब तोह़फ़े में देने के लिये अपनी दुकानों पर भी रसाइल रखने का मा'मूल बनाइये, अख़्बार फ़रोशों या बच्चों के ज़रीए अपने मह़ल्ले के घर घर में माहाना कम अज़ कम एक अ़दद सुन्नतों भरा रिसाला या म-दनी फूलों का पेम्फ़लेट पहुंचा कर नेकी की दा'वत की धूमें मचाइये ।

फ़ेहरिस

जे़ह्न में कुफ़्रिय्या ख़यालात आना

सुवाल : उस शख़्स के बारे में क्या हुक्म है जो कहता है कि परेशानी के आ़लम में मेरे जे़ह्न में **कुफ़्रिय्या ख़यालात** आते रहते हैं।

जवाब : जे़ह्न में **कुफ़्रिय्या** ख़यालात का आना और उन्हें बयान करने को बुरा समझना ऐ़न **ईमान की अ़लामत** है क्यूं कि **कुफ़्रिय्या वसाविस** शैत़ान की त़रफ़ से होते हैं और वोह लईन मरदूद चाहता है कि मुसल्मान से **ईमान** की दौलत छीन ले। **नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते सरापा अ़–ज़मत में बा'ज़ सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : हमें ऐसे ख़यालात आते हैं कि जिन्हें बयान करना हम बहुत बुरा समझते हैं। **सरकारे दो आ़लम** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : क्या वाके़ई ऐसा होता है ? उन्हों ने अ़र्ज़ की : जी हां। इर्शाद फ़रमाया : "येह तो ख़ालिस **ईमान** की निशानी है।" (صَحِيح مُسلِم ص٨٠حديث ١٣٢)

सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्तरीक़ह ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "कुफ़्री बात का दिल में ख़याल पैदा हुवा और ज़बान से बोलना बुरा जानता है तो येह कुफ़्र नहीं बल्कि ख़ास **ईमान** की अ़लामत है कि दिल में **ईमान** न होता तो उसे बुरा क्यूं जानता।" (बहारे शरीअ़त, जिल्द : 2, ह़िस्सा : 9, स. 456, मक–त–बतुल मदीना, बाबुल मदीना कराची)

सुवाल : अगर किसी के सामने तज़्किरा किया कि मुझे फ़ुलां फ़ुलां **कुफ़्रिय्या वस्वसे** आते हैं, मैं उन से तंग हूं, मुझे कोई इ़लाज बताइये। क्या इस सूरत में भी हुक्मे **कुफ़्र** है ?

जवाब : नहीं, इस सूरत में हुक्मे **कुफ़्र** नहीं।

(कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब, स. 423, 424)